तापमान
अधिकतम 32 .2 डिग्री
न्यूनतम 17 .1 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार, 12 अक्टूबर 2025

11 ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी में थिरके बच्चे

12 कभी नमी तो कभी मशीन खराब होने बहाने टाल रहे खरीद

खबर संक्षेप

डॉ. सांगवान ने संभाला प्राचार्या का कार्यभार

गोहाना। डॉ. मीनाक्षी सांगवान ने शनिवार को राजकीय महिला महाविद्यालय, गोहाना की प्राचार्या का कार्यभार संभाल लिया। महाविद्यालय के स्टाफ ने पुष्पगुच्छ भेंट करके प्राचार्या का सम्मान किया। वे इस महाविद्यालय की पूर्व छात्रा भी रही हैं। कार्यक्रम का मंच संचालन प्रो. शमशेर भंडेरी ने किया। इस अवसर पर प्रो. सतीश कुमार सहित अन्य स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

हर्बल पार्क में व्यक्ति का शव मिला

गोहाना। शनिवार को शहर में बरोदा रोड स्थित नागरिक अस्पताल के सामने डा. मंगल सैन हर्बल पार्क में एक व्यक्ति का शव मिला। मृतक की शिनाख्त नहीं हो पाई। शव को नागरिक अस्पताल से भगत फूल सिंह राजकीय महिला मेडिकल कालेज के अस्पताल में भिजवाया गया। पुलिस ने शव को शिनाख्त के लिए शवगृह में रखवा दिया। शनिवार को दिन में पार्क में कुछ लोगों ने एक व्यक्ति को अचेत हालत में देखा। उसके पास चद्दर, बैग के अलावा अस्पताल की स्लिप थी। उसे जांच के लिए अस्पताल लाया गया तो वह मृत मिला।

घर से सोने के जेवरात व नकदी चोरी, केस दर्ज

खरखौदा। शहर के वार्ड संख्या 7 के एक मकान चोरों ने सोने के जेवरात व नकदी चोरी ली है। सचिन ने बताया कि वह और उसकी पत्नी नौकरी करते है। जब उसने सुबह के समय अलमारी को खुला हुआ पाया तो उसमें से सोने की 2 तोले की एक कंठी, 2 अंगूठी, 2 जोड़ी कानों के झुमके, 1जोड़ी बाले व लगभग 38 हजार रुपए चोरी हुए पाए गए।

ईंट से हमला कर जान से मारने की धमकी

गन्नौर। गांव पुगथला निवासी हरिओम ने गन्नौर पुलिस को शिकायत दी है कि गांव के एक युवक संदीप ने उसके पिता पर जानलेवा हमला किया। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हरिओम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि आरोपित संदीप ने उनके पिता के साथ गाली-गलौज करते हुए उसके सिर पर ईंट से वार किया और जान से मारने की धमकी दी। घायल अवस्था में उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया।

बुजुर्ग महिला ट्रेन की चपेट में आई

सोनीपत। दिल्ली-अंबाला रेलमार्ग पर राजलूगढ़ी रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन की चपेट में आने से 61 वर्षीय बुजुर्ग महिला की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना मिलते ही राजकीय रेलवे पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल के शवगृह में भिजवाया। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतका की पहचान बिमला (61) निवासी राजपुर के रूप में हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, बिमला रेलवे ट्रैक पार कर रही थी, इसी दौरान गुजर रही ट्रेन की चपेट में आ गई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस जांच में जुटी है।

प्रधानमंत्री की रैली की तैयारियां तेज, दुल्हन की तरह सजाया जा रहा राई

लोगों के बैठने के लिए 12 ब्लॉक बनेंगे सबके एंट्री व एक्जिट गेट अलग-अलग

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

राई स्थित राजीव गांधी एजुकेशन सिटी एक बार फिर बड़े आयोजन की गवाह बनने जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 17 अक्तूबर को प्रस्तावित दौरे को लेकर यहां तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। विशाल रैली के लिए एजुकेशन सिटी परिसर में भव्य पंडाल खड़ा किया जा रहा है, वहीं पूरे क्षेत्र की सड़कों, पार्किंग एरिया और मार्गों को नए सिरे से संवारा जा रहा है। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, नगर निगम और लोक निर्माण विभाग की टीमें लगातार दिन-रात जुटी हुई हैं। राजीव गांधी एजुकेशन सिटी फिलहाल तैयारियों की रौनक में सराबोर है। परिसर में सजावट, झंडे, पोस्टर और रंग-बिरंगी लाइटें इस आयोजन को भव्य स्वरूप दे रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि वर्षों बाद यहां इस स्तर का आयोजन देखने को मिल रहा है, जिसने पूरे राई क्षेत्र में उत्साह का माहौल बना दिया है।

रैली स्थल पर सुरक्षा और सुविधा दोनों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही

रैली स्थल पर सुरक्षा और सुविधा दोनों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। वीवीआईपी, वीआईपी, महिलाओं, पुरुषों और पत्रकारों के लिए अलग-अलग ब्लॉक में बैठने की व्यवस्था बनाई जा रही है। करीब 12 ब्लॉकों में दर्शकों के बैठने की योजना तैयार की गई है, ताकि भीड़ का प्रबंधन बेहतर तरीके से हो सके। अधिकारियों के अनुसार, प्रत्येक ब्लॉक में प्रवेश और निकास के लिए अलग गेट होंगे, जिससे किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो।

पार्किंग और आवागमन के लिए विशेष इंतजाम

रैली में जुटने वाली भीड़ को देखते हुए प्रशासन ने पार्किंग व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया है। एचएसवीपी की ओर से पार्किंग स्थल तक नया वैकल्पिक मार्ग तैयार किया जा रहा है, जिस पर पत्थर डालकर उसे मजबूत बनाया जा रहा है। यह मार्ग सीधे मुख्य आयोजन स्थल तक पहुंचेगा, ताकि वाहनों की आवाजाही सुचारू रहे। बारिश या भीड़ की स्थिति में भी आसानी से पार्किंग तक पहुंच सके।

सड़कों पर डाली जा रही तारकोल, रंगाई-पुताई तेज

एजुकेशन सिटी के अंदर और बाहर दोनों ओर सौंदर्यीकरण का कार्य तेजी से जारी है। सड़कों पर नई तारकोल की परत डाली जा रही है, डिवाइडर और रेलिंग की रंगाई-पुताई की जा रही है। बिजली विभाग की टीमों ने भी परिसर की लाइटिंग को आधुनिक एलईडी लाइटों से सुसज्जित करने का कार्य शुरू कर दिया है।

हेलीपैड से पंडाल तक बनेगा नया मार्ग

प्रधानमंत्री के आगमन के मद्देनजर हेलीपैड से पंडाल तक विशेष मार्ग तैयार किया जा रहा है। लोक निर्माण विभाग की टीम इस मार्ग पर विशेष निगरानी रखे हुए है। मार्ग को समतल और सुरक्षित बनाने के साथ उस पर नई परत बिछाई जा रही है, जिससे वीवीआईपी मूवमेंट में कोई बाधा न आए। इसकी पूरी तैयारी की जा रही है।

ऑनलाइन नौकरी के नाम पर युवक से पांच लाख की ठगी

सोनीपत। जिले में साइबर ठगी के मामले कम होने का नाम नहीं ले रहे है। साइबर ठगों ने ऑनलाइन नौकरी दिलवाने के नाम पर एक युवक से पांच लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। ठगों ने फर्जी वेबसाइट, नकली कंपनियों और बनावटी दस्तावेजों के माध्यम से वारदात को अंजाम दिया। पीड़ित को जब नौकरी नहीं मिली तो उसे ठगी का पता चला। मामले की जानकारी साइबर थाना पुलिस को दी गई, जिसके बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सोनीपत निवासी गोपाल कृष्ण ने बताया कि 12 जुलाई को उनके मोबाइल पर एक महिला का कॉल आया, जिसने खुद को फाइंड टू करियर डॉट कॉम नामक जॉब कंसल्टेंसी से निकिता ठाकुर बताया। उसने कहा कि उनके प्रोफाइल के अनुसार चार कंपनियां उन्हें नौकरी देने के लिए उपयुक्त मानती हैं। इसके लिए 5,950 रुपये रजिस्ट्रेशन शुल्क मांगा गया, जिसकी वैधता दो वर्ष बताई गई। इसके बाद जोसेफ डेनियल नामक व्यक्ति ने खुद को उनका रिलेशनशिप मैनेजर बताते हुए संपर्क किया। उसने इंटरव्यू, टेस्ट और एग्रीमेंट प्रक्रिया के नाम पर अलग-अलग तिथियों में नौ बार करीब पांच लाख रुपये विभिन्न बैंक खातों में जमा करवाए।

फोन पर परीक्षा और इंटरव्यू, बाद में फोन किया बंद

पीड़ित के अनुसार, ठगों ने ब्लैकरॉक कंपनी के नाम पर टेलीफोन पर फर्जी इंटरव्यू और तकनीकी परीक्षा भी कराई। इसके बाद सैलरी डिस्कशन व एम्प्लॉयमेंट एग्रीमेंट बॉन्ड के नाम पर और पैसे मांगे गए। जब उन्होंने बार-बार संपर्क करने की कोशिश की तो सभी नंबर बंद मिले। जांच में पता चला कि वेबसाइट और दस्तावेज फर्जी है। गोपाल कृष्ण ने साइबर हेल्पलाइन 1930 पर कॉल कर शिकायत दी और ऑनलाइन पोर्टल पर भी मामला दर्ज कराया। साइबर थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

तालाब के किनारे शव मिलने से सनसनी

खरखौदा। थाना क्षेत्र खरखौदा के गांव गोपालपुर के तालाब के किनारे एक व्यक्ति का शव मिला है। शव के मिलने पर पुलिस को सूचना देकर मौके पर बुलाया गया। मृत व्यक्ति की पहचान गांव गोपालपुर निवासी 50 वर्षीय राजेश के रूप में हुई है। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। जिससे मौत होने के कारणों का पता लगाया जा सके। फिलहाल पुलिस द्वारा जांच पड़ताल की जा रही है।

ग्रामीण के खाते से 1.33 लाख रुपये निकले

गोहाना। सदर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी ग्रामीण के खाते से साइबर ठग ने 1.33 लाख रुपए निकाल लिए गए। आरोपित ने खाता धारक का नंबर पोर्ट कराकर गुगल-पे के माध्यम से यह राशि निकाली। शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया। राजेश ने पुलिस को बताया कि उसका एसबीआई में खाता है। साइबर ठग ने उसके खाते से पहले करीब 40 हजार रुपए निकाले। इसकी जानकारी लगने पर वह बैंक में गया तो उसे पता चला कि आरोपित द्वारा उसका नंबर पोर्टल कराया गया है। इसके बाद उसने गुगल-पे के माध्यम से राशि निकाली। इसके बाद खाता धारक ने बैंक में अपना मोबाइल नंबर भी बदलवाया। लेकिन तब तक आरोपित द्वारा उसके खाते से कुल 1 लाख 33 हजार रुपए निकाल लिए। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया।

प्रेम नगर में तीसरी मंजिल से नीचे गिरी महिला, मौत

सोनीपत। सिविल लाइन थाना क्षेत्र के प्रेम नगर में देर रात एक बुजुर्ग महिला की छत से गिरने से मौत हो गई। सूचना मिलते ही सिविल लाइन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल के शवगृह में भिजवाया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, प्रेम नगर निवासी सरोज बाला उम्र लगभग 65 वर्ष देर रात किसी काम से घर की तीसरी मंजिल पर गई थीं। इस दौरान संतुलन बिगड़ने से वह नीचे गिर गईं। गिरने से गंभीर रूप से घायल सरोज बाला को उपचार के लिए निजी अस्पताल में लेकर जाया गया। जहां उपचार के दौरान मौत हो गई। घटना की सूचना पर पहुंचे पुलिसकर्मियों ने आसपास के लोगों से पूछताछ की। प्रारंभिक जांच में यह हादसा बताया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि सभी पहलुओं से जांच की जा रही है और आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा-194 के तहत कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है।

काम करते समय संतुलन बिगड़ा

संदिग्ध परिस्थितियों में 19 वर्षीय युवक की मौत

सोनीपत। मुरथल थाना क्षेत्र की आरके कॉलोनी में 19 वर्षीय युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक की पहचान अजीत कुमार निवासी बिहार के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल के शवगृह में भिजवाया। पुलिस के अनुसार, अजीत कुमार आरके कॉलोनी में रहकर मजदूरी करता था। शुक्रवार देर रात वह अपने कमरे में मृत अवस्था में मिला। आसपास के लोगों ने तुरंत पुलिस को इसकी जानकारी दी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया और साक्ष्य एकत्रित किए। शव को पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल भेजा गया, जहां परिजनों के बयान पर पोस्टमार्टम करवाकर शव उन्हें सौंप दिया गया। पुलिस ने बताया कि विसरा सैंपल जांच के लिए प्रयोगशाला में भेजा जाएगा, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा। फिलहाल पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है और सभी पहलुओं से घटना की पड़ताल की जा रही है।

सट्टा खेलते आठ युवक गिरफ्तार 40 हजार रुपये की नकदी बरामद

सोनीपत। सिविल लाइन थाना पुलिस ने सट्टा खाईवाली करते हुए आठ आरोपितों को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मौके से 40,200 रुपये नकद, 104 ताश के पत्ते और चार ताश की गड्डियां बरामद की हैं। पुलिस ने सभी आरोपितों को अदालत में पेश कर न्यायालय के आदेशानुसार जमानत पर रिहा कर दिया है।पुलिस के अनुसार, 9 अक्टूबर को सहायक उप निरीक्षक प्रदीप अपनी टीम के साथ बस अड्डा सोनीपत के पास गश्त पर थे। इस दौरान उन्हें सूचना मिली कि मीट मार्किट क्षेत्र में कुछ लोग ताश के पत्तों पर रुपये लगाकर जुआ खेल रहे है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और कार्रवाई करते हुए आठ लोगों को काबू किया। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान पप्पु निवासी कोट मोहल्ला सोनीपत, मंजीत निवासी आदर्श नगर सोनीपत, विपिन निवासी जटवाड़ा, अभिषेक निवासी धानक बस्ती, अशोक निवासी कोट मोहल्ला, साजन निवासी कोट मोहल्ला, गोविंदा निवासी सुंदर सांवरी और सुनील निवासी सुंदर सांवरी के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि मौके से कुल 40,200 रुपये और ताश की गड्डियां बरामद की गईं। सभी के खिलाफ जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

दो अलग-अलग स्थानों पर झगड़े में दो घायल

सोनीपत। जिले में दो अलग-अलग स्थानों पर झगड़े की घटनाएं सामने आई हैं। दोनों मामलों में एक महिला और एक युवक घायल हुए है। पुलिस ने दोनों घटनाओं में जांच शुरू कर दी है।पहली घटना गांव महलाना की है, जहां किसी बात को लेकर दो पक्षों के बीच विवाद हो गया। देखते ही देखते कहासुनी झगड़े में बदल गई। इस दौरान 52 वर्षीय शीला देवी को गंभीर चोटें आईं। दूसरी घटना कुंडली थाना क्षेत्र के प्याऊ मनिहारी की है। यहां भी दो पक्षों में कहासुनी के बाद झगड़ा हो गया। झगड़े में 30 वर्षीय राकेश घायल हो गया। उसे भी प्राथमिक उपचार के लिए नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया।

आईटीआई में छठी बार दाखिले का मौका, छात्रों की संख्या बढ़ने की उम्मीद

318 सीटें खाली, ऑन द स्पॉट दाखिला प्रक्रिया 17 तक जारी रहेगी, हर दिन होगी काउंसलिंग

सुबह 9 बजे से 11 बजे तक आवेदन करना होगा। इसके बाद मेरिट कार्ड जमा करवाने होंगे

हरिभूमि न्यूज. सोनीपत

जिले के युवाओं के लिए राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में दाखिले का एक और सुनहरा अवसर मिल गया है। कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण निदेशालय ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए छठी बार ऑन द स्पॉट दाखिला प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस प्रक्रिया के तहत संस्थान में शेष बची सीटों पर 17 अक्टूबर तक दाखिला किया जाएगा। जिले की सभी आईटीआई में सीटें खाली हैं, उदाहरण के लिये सोनीपत आईटीआई में भी 318 सीटें खाली हैं, जिन पर दाखिला किया जाएगा। हालांकि पहले दिन एक भी विद्यार्थी ने दाखिला नहीं लिया, लेकिन संस्थान प्रशासन को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ेगी।

छात्रों की सुविधा के लिए हेल्प डेस्क स्थापित

राठधना रोड स्थित राजकीय आईटीआई में 31 ट्रेड में कुल 1044 सीटें निर्धारित की गई थीं। पांच चरणों में दाखिला प्रक्रिया पूरी होने के बाद अब तक 726 सीटों पर ही प्रवेश हो पाया है। ऐसे में शेष सीटों को भरने के लिए संस्थान ने ऑन द स्पॉट दाखिला प्रक्रिया का विकल्प अपनाया है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए संस्थान में हेल्प डेस्क भी स्थापित किया गया है,।

चयनित छात्रों को फीस जमा करवानी होगी

नोडल अधिकारी सुनील मलिक ने बताया कि ऑन द स्पॉट दाखिला प्रक्रिया में हर दिन काउंसलिंग आयोजित की जाएगी। इसमें पहले से आवेदन कर चुके विद्यार्थियों के साथ-साथ नए इच्छुक अभ्यर्थियों को भी शामिल किया जाएगा। विद्यार्थियों को रोजाना सुबह 9 बजे से 11 बजे तक आवेदन करना होगा। इसके बाद दोपहर 12 बजे तक मेरिट कार्ड जमा करवाने होंगे। उसी दिन मेरिट लिस्ट जारी कर चयनित विद्यार्थियों से फीस जमा कराने और दस्तावेज सत्यापन की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

छात्रों के लिए दाखिले का बड़ा अवसर

कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण निदेशालय ने आईटीआई में रिक्त सीटों पर दाखिले के लिए छात्रों को एक और मौका दिया है। संस्थान में रिक्त सीटों की सूची प्रदर्शित कर दी गई है। अब तक दाखिले से वंचित रहे छात्र विशेष दाखिला प्रक्रिया के माध्यम से 17 अक्तूबर तक संस्थान में दाखिला पा सकते हैं। आईटीआई में जिन व्यवसायों में रिक्त सीटें उपलब्ध हैं, छात्रों को उन्हीं व्यवसायों में दाखिला मिल सकेगा।
-विक्रम सिंह, प्रधानाचार्य, आईटीआई, सोनीपत।

नेशनल स्केटिंग चैंपियनशिप में हलालपुर के जय ने जीता गोल्ड

खरखौदा। गोवा में आयोजित नेशनल चैंपियनशिप 2025 की स्केटिंग प्रतियोगिता में हलालपुर के जय दहिया ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल प्राप्त किया। अपनी उपलब्धि से जय दहिया ने अपने पैतृक गांव हलालपुर और स्कूल आर रुद्रा इंटरनेशनल स्कूल मोहाली का नाम रोशन किया।

शिक्षकों ने प्रतिभाशाली छात्र को सराहा

कक्षा पांचवीं के छात्र जय दहिया को स्कूल प्रबंधन द्वारा सम्मानित किया गया। स्कूल के सभी अध्यापकों और स्टाफ ने जय दहिया की उपलब्धि पर बधाई दी। जय ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और स्कूल को दिया है।

स्टेप अप एसआईपी : बच्चे की पूरी पढ़ाई फ्री, फिर भी 50 लाख बचेंगे

भविष्य | बिजनेस डेस्क

अगर आपको भी बच्चे की पढ़ाई और अन्य खर्च से समय रहते मुक्ति पानी है तो आपके लिए स्टेप अप एसआईपी एक अहम निवेश का विकल्प साबित हो सकती है। इसके जरिये निवेश करने से आपको बड़ी राहत मिलेगी। स्कूल की बढ़ती फीस और हायर एजुकेशन की चिंता अक्सर अभिभावकों को सताती हैं। निवेश के जानकारों का कहना है कि समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो इस टेंशन को 'बाय-बाय' कहा जा सकता है। इसके लिए आपको एसआईपी के जरिये निवेश करना होगा और इसे बढ़ाते जाना होगा। यह योजना आपके बच्चे की शिक्षा का खर्च उठा सकती है। साथ ही, बच्चे के 22 साल का होने तक आपके पास 50 लाख रुपये से ज्यादा बच सकते हैं। इसके लिए आपको बच्चे के जन्म से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करनी होगी। इसे 10 साल तक हर साल 10% बढ़ाना होगा। 10 साल बाद कॉन्ट्रिब्यूशन बंद कर देना है। फिर बच्चे की 10 से 22 साल की उम्र तक हर महीने 25,000 रुपये निकालने हैं। यह सब बिना किसी एजुकेशन लोन के संभव है।

यह दिया सुझाव

99% माता-पिता बिना किसी स्कीम के स्कूल फीस पर लाखों रुपये खर्च करते हैं। 'क्या हो अगर 10 साल की एसआईपी आपके बच्चे की शिक्षा को लगभग मुफ्त में फंड कर सके... और फिर भी उनके सपनों के लिए लाखों छोड़ जाए?' उन्होंने एक स्टेप-अप एसआईपी स्ट्रैटेजी का सुझाव दिया है। यह स्ट्रैटेजी महंगे एजुकेशन लोन की जगह ले सकती है। यह लंबी अवधि की वित्तीय योजना है।

कैसे काम करती है स्कीम?

यह योजना इस तरह काम करती है। जब आपका बच्चा पैदा हो तब हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करें। अगले 10 सालों तक हर साल एसआईपी की राशि को 10% बढ़ाएं। 10 साल पूरे होने के बाद एसआईपी में पैसा डालना बंद कर दें। जब बच्चा 10 साल का हो जाए तब से 22 साल का होने तक हर महीने 25,000 रुपये निकालें। यह पैसा बच्चे की फीस के लिए होगा। इस योजना में 12% सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) मानी गई है।

क्या है पूरा गणित?

निवेश के गणित के अनुसार, आप 10 साल में कुल 19.12 लाख रुपये का निवेश करेंगे। तब तक यह राशि बढ़कर 32.69 लाख रुपये हो जाएगी। अगले 12 सालों में आप एजुकेशन के लिए कुल 36 लाख रुपये निकालेंगे। इसके बावजूद आपके खाते में 51 लाख रुपये बचे रहेंगे। उन्होंने कहा, 'पैसे निकालते समय भी कंपाउंडिंग काम करती है।' इसका मतलब है कि बचा हुआ पैसा बढ़ता रहता है। इससे भुगतान के दौरान भी धन बढ़ता रहेगा।

दंग कर देने वाले रिजल्ट

इस योजना की तुलना एजुकेशन लोन से करें। 36 लाख रुपये के एजुकेशन लोन पर 11% ब्याज दर से 10 साल के लिए ईएमआई लगभग 50,000 रुपये प्रति माह होगी। यह एसआईपी से निकाली गई राशि से दोगुना है। इसमें ब्याज का भारी बोझ भी होता है। कौशिक ने कहा कि यह रणनीति आपकी आय वृद्धि से मेल खाती है। उन्होंने बताया, '10 हजार रुपये महीने से शुरू करें और 10वें साल तक आप सालाना 2.8 लाख रुपये का निवेश कर रहे होंगे जो प्रमोशन और वेतन वृद्धि के अनुरूप है।' उनके कुछ सुझाव भी हैं। कम लागत वाले इंडेक्स फंड का उपयोग करें। आपात स्थितियों के लिए हमेशा कुछ लिक्विडिटी बनाए रखें। अपनी प्रगति की सालाना समीक्षा करते रहें। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, '10 साल के लिए एक अनुशासित, स्टेप-अप एसआईपी एक दशक के ओवरटाइम से कहीं ज्यादा कर सकती है।' यह तनाव-मुक्त और स्मार्ट कंपाउंडिंग का तरीका है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- सीए ने निवेशकों को बताया क्रिप्टोकरेंसी से होने वाले नफे-नुकसान का गणित
- क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं तो इस पर लगने वाले टैक्स के बारे में भी जान लें

100 रुपये प्रॉफिट कमाने के बाद 100 रुपये गंवाने पर भी चुकाने होंगे 30 रुपये

क्रिप्टो नहीं, टैक्स का मायाजाल पैसे गंवाए तो भी देना होगा कर

अगर आप बाजार में शॉर्ट टर्म निवेश करना चाहते हैं तो आपके कुछ स्कीम बाजार में मौजूद हैं। इनमें रिटर्न भी बढ़िया मिलता है इसे लिक्विड फंड के नाम से जाना जाता है। ऐसे निवेश में पैसा उन सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों से अधिक नहीं होती है। निवेशकों का पैसा इसके जरिए मनी मार्केट, शॉर्ट टर्म कॉरपोरेट डिपॉजिट और ट्रेजरी में लगाया जाता है।

देश में कई सालों से लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रहे हैं। कई तो इससे मोटा मुनाफा भी कमा चुके हैं और कई अपनी जमापूंजी गंवा चुके हैं। लेकिन अब सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के नियम कड़े कर दिए हैं। क्रिप्टोकरेंसी में होने वाली कमाई पर 30 फीसदी का टैक्स लगता है। खास बात यह है कि आपने क्रिप्टोकरेंसी में 100 रुपये का प्रोफिट कमाया और बाद में उसे इसी एसेट्स में गंवा दिया तो भी आपको 30 रुपये टैक्स देना होगा। पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का चलन काफी तेजी से बढ़ा है। वहीं पिछले साल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। तब से क्रिप्टो में और तेजी देखने को मिली है। इसे देखते हुए अब काफी भारतीय बिटकॉइन, इथेरियम, बाइनेंस, डॉगकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने लगे हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी पर किसी भी सरकार का केंद्रीय बैंक का कंट्रोल नहीं है, ऐसे में इसमें होने वाले प्रॉफिट पर भारत में टैक्स से जुड़े नियम काफी सख्त हैं। दरअसल, क्रिप्टोकरेंसी में टैक्स का नियम कुछ ऐसा है कि इसमें पैसे कमाने पर ही नहीं बल्कि पैसे गंवाने पर भी इनकम टैक्स चुकाना पड़ सकता है। फिर चाहे आपका पूरा पोर्टफोलियो घाटे में ही क्यों ना चल रहा हो। भारत के सख्त क्रिप्टो टैक्स नियमों के तहत, निवेशकों को हर रुपये के मुनाफे पर फ्लैट 30% टैक्स देना होता है, भले ही कुल मिलाकर नुकसान हुआ हो। एक्सपर्ट का कहना है कि यह सिस्टम दुनिया के सबसे कठोर नियमों में से एक है, जिससे भारतीय क्रिप्टो निवेशकों को राहत मिलने की गुंजाइश बहुत कम है। इस टैक्स सिस्टम को लेकर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) ने अपनी राय रखी और क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों को अगाह किया है कि इसमें सोच समझकर ही निवेश करें, वरना यह घाटे का सौदा हो सकता है।

क्रिप्टो टैक्सेशन की बताई सच्चाई

एक सीए ने सोशल मीडिया पर क्रिप्टो टैक्सेशन की सच्चाई बताई है। उन्होंने पोस्ट के जरिए मैसेज दिया है कि भले ही आपने क्रिप्टो में 100 रुपये गंवाए हों, आपको 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने पड़ सकते हैं। उन्होंने समझाया कि मान लीजिए कि आपने एक ही वित्तीय वर्ष में बिटकॉइन पर 100 रुपये का मुनाफा कमाया, लेकिन इथेरियम पर 200 रुपये का नुकसान उठाया। किसी भी दूसरे निवेश में आपको कुल 100 रुपये का नुकसान होता। लेकिन क्रिप्टो में ऐसा नहीं है। बिटकॉइन से हुई 100 रुपये की कमाई पर आपको 30% यानी 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने होंगे। फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इथेरियम या किसी दूसरी क्रिप्टो से आपको कितना नुकसान हुआ है। ऐसे में आपको कुल 130 रुपये की चपत लगेगी।

क्या है क्रिप्टो से जुड़े नियम

- आयकर अधिनियम की धारा 115बीबीएच के तहत क्रिप्टो एसेट्स के लिए कुछ खास और कड़े नियम हैं।
- नुकसान की भरपाई नहीं (आप एक क्रिप्टो नुकसान को दूसरे मुनाफे से नहीं काट सकते)।
- नुकसान आगे नहीं ले जा सकते (इसे समायोजित नहीं कर सकते)।
- अधिग्रहण की लागत को छोड़कर कोई कटौती नहीं।
- ट्रेडिंग फीस जैसे चार्ज भी नहीं घटाए जाते
- इथेरियम पर 200 रुपये के नुकसान को अनदेखा कर दिया जाएगा और बिटकॉइन पर हुए 100 रुपये के मुनाफे पर 30% यानी 30 रुपये टैक्स देना होगा।
- कुल मिलाकर 130 रुपये का नुकसान होगा। यहां तक कि ट्रेडिंग फीस, गैस चार्ज, माइनिंग की लागत, या एक्सचेंज कमीशन जैसी चीजें आपके टैक्सेबल मुनाफे से नहीं घटाई जा सकतीं।

क्या है क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा है जो कंप्यूटर नेटवर्क पर सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तरीके से काम करती है। यह पारंपरिक मुद्राओं की तरह नहीं है, जो सरकारों द्वारा नियंत्रित और जारी की जाती हैं।

विशेषताएं

1. विकेंद्रीकृत : क्रिप्टोकरेंसी किसी एक केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित नहीं होती है।
2. डिजिटल : यह पूरी तरह से डिजिटल रूप में मौजूद होती है।
3. क्रिप्टोग्राफी : सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
4. ब्लॉकचेन : अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होती हैं।
5. सीमित आपूर्ति : कई क्रिप्टोकरेंसी की आपूर्ति सीमित होती है।

प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी

1. बिटकॉइन : पहली और सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी।
2. एथेरियम : स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए जानी जाती है।
3. रिपल : अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए उपयोग।
4. लाइटकॉइन : बिटकॉइन का एक वैकल्पिक।
5. कार्डानो : शोध-आधारित ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म।

उपयोग

1. डिजिटल भुगतानः ऑनलाइन लेनदेन के लिए।
2. निवेशः कई लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं।
3. विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग : एथेरियम जैसे प्लेटफॉर्म पर।
4. सीमापार लेनदेनः पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेज और सस्ता।

जोखिम

1. अस्थिरताः कीमतें बहुत तेजी से बदल सकती हैं।
2. सुरक्षा जोखिमः हैकिंग और चोरी का खतरा।
3. नियामक अनिश्चितताः विभिन्न देशों में नियम अलग-अलग हैं।
4. घोटालेः फ्रॉड और स्कैम का खतरा।
5. तकनीकी जोखिमः तकनीकी समस्याएं आ सकती हैं।

दिवाली बोनस का करें सही इस्तेमाल कर सकते हैं अपने लिए बड़ी बचत

म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट प्लान या कर्ज चुकाने में लगाएं, जरूरतों के लिए 30%, इच्छाओं के लिए- 30%, वेल्थ बनाने के लिए-40% प्रयोग करें

तोहफा | बिजनेस डेस्क

दिवाली को महज कुछ दिन ही शेष बचे हैं। ऐसे में हर साल दिवाली पर ज्यादातर कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं। यह बोनस हमारे लिए खुशियों का तोहफा भी होता है, साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का मौका भी। हालांकि अक्सर होता यह है कि जैसे ही बोनस हाथ में आता है, हम शॉपिंग, नई चीजें खरीदने और शौक पूरे करने में पैसा खर्च कर देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इस पैसे का स्मार्ट उपयोग क्या हो सकता है। इसका आप कहां सही इस्तेमाल कर सकते हैं। कैसे अपनी वेल्थ बना सकते हैं या कर्ज उतार सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से बांटें : सही बैलेंस बनाएं

बोनस को खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि इसे दो हिस्सों में बांट लें-एक हिस्सा त्योहार मनाने के लिए और दूसरा भविष्य की जरूरतों के लिए। बाजार के जानकारों के अनुसार बोनस का 50% हिस्सा त्योहार और लाइफस्टाइल पर खर्च करें और बाकी 50% म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट या कर्ज चुकाने जैसे लॉन्ग-टर्म गोल्स के लिए रखें। अगर आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारियां हैं, तो तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। जैसेः-

■ जरूरतों के लिए- 30%■ इच्छाओं के लिए- 30%■ वेल्थ बनाने के लिए- 40%

जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें।

इसे बांटने का हर किसी का तरीका अलग हो सकता है। 'अपने बोनस को अपनी जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें। अगर आपके ऊपर हाई-इंटरेस्ट कर्ज है, तो 60-70% बोनस उसको चुकाने में लगाएं।'

"'बोनस को बांटने की प्रक्रिया में परिवार को जरूर शामिल करें, ताकि हर कोई मस्ती और अनुशासन के बीच बैलेंस समझे।' इस तरह समझदारी से खर्च और स्मार्ट निवेश के साथ आपका दिवाली बोनस न सिर्फ त्योहार को खास बनाएगा, बल्कि आपके भविष्य को भी बेहतर बनाने के काम आ सकता है।

हाई-इंटरेस्ट कर्ज चुकाएं

अपने बोनस का कुछ हिस्सा क्रेडिट कार्ड के बिल, पर्सनल लोन या किसी भी हाई-इंटरेस्ट कर्ज को चुकाने में लगाएं। इससे भविष्य में आपका पैसा बचेगा। 'सबसे पहले अपने कर्ज की लिस्ट बनाएं, सबसे ज्यादा इंटरेस्ट वाले कर्ज को पहले चुकाएं। यहां तक कि आंशिक पेमेंट भी लोन की अवधि और टोटल इंटरेस्ट को कम कर सकता है।' अगर आपके पास महंगा कर्ज है, तो नए निवेश से पहले इसे चुकाना प्रायोरिटी होनी चाहिए।

निवेश की स्ट्रैटजी

निवेश के लिए ऑप्शन्स आपकी जरूरतों पर निर्भर करते हैं। '3 साल से कम की अवधि के लिए लिक्विड फंड्स या रिकरिंग डिपॉजिट्स में निवेश करें। मीडियम से लॉन्ग-टर्म के लिए डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स या इंडेक्स फंड्स चुनें।' अपने पोर्टफोलियो में डायवर्सिफिकेशन के लिए सोवरेन गोल्ड बॉन्ड्स या गोल्ड ईटीएफ भी जोड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि रिटर्न और लिक्विडिटी में बैलेंस बनाएं, ताकि आपका शॉर्ट-टर्म पैसा रिस्क में न आए। दिवाली बोनस आपके फाइनेंशियल गोल्स को तेजी से पूरा करने का मौका है। 'बोनस या तो एक हफ्ते की शॉपिंग में खत्म हो सकता है या सालों तक आपके लिए काम कर सकता है। इसे फाइनेंशियल फिटनेस का बूस्टर समझें।'

सेलिब्रेशन के लिए बजट बनाएं

त्योहार की खुशी फाइनेंशियल टेंशन में न बदल जाए इसके लिए सही बजट बनाना जरूरी है। 'पहले अंदाजा लगाएं कि त्योहार में कितना खर्च होगा-गिफ्ट्स, घूमने-फिरने, सजावट, ट्रैवल और धार्मिक रस्मों पर।' इस खर्च को अपने बोनस और रेगुलर इनकम के साथ मिलाकर देखें। इससे आपको एक फिक्स्ड बजट मिलेगा और आप बाकी पैसों को पहले ही निवेश में डालकर अपने गोल्स को प्रायोरिटी दे सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से सेलिब्रेट करें

त्योहारों में ओवरस्पेंडिंग का खतरा हमेशा रहता है। 'बोनस को 'एक्स्ट्रा' पैसा समझकर फूंक न दें।' क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन लेकर शॉपिंग करना तो बिल्कुल अवॉइड करें, क्योंकि इनके इंटरेस्ट रेट्स बहुत ज्यादा होते हैं और ये कर्ज के जाल में फंसा सकते हैं। बिना कर्ज के सेलिब्रेशन के लिए क्रिएटिव तरीके अपनाएं। 'पॉटलक गैदरिंग्स करें, दीया डेकोरेशन बनाएं या अर्ली-बर्ड ट्रैवल डील्स का फायदा उठाएं।'

'फंड ऑफ फंड्स' में करें निवेश, दोनों हाथों में रहेंगे लड्डू

बिजनेस डेस्क

सोना और चांदी की कीमत इस समय रॉकेट की रफ्तार से भाग रही है। वहीं, फेस्टिव सीजन के कारण इसकी कीमत में और तेजी आ सकती है। अगर आप धनतेरस पर सोना और चांदी दोनों में निवेश करना चाहते हैं तो 'कॉम्बो फंड ऑफ फंड्स' एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकते हैं। दरअसल, इस समय म्यूचुअल फंड कंपनियां निवेशकों को दोनों धातुओं में आसानी से निवेश करने का मौका दे रही हैं। इसके लिए वे डुअल-एसेट पैसिव फंड्स (ऐसे फंड जो सोने और चांदी दोनों में निवेश करते हैं) लॉन्च कर रही हैं। पिछले दो साल में सोने की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। वहीं, औद्योगिक मांग और सप्लाई में कमी के कारण चांदी भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में निवेशक महंगाई से बचने और अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए गोल्ड और सिल्वर फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) की ओर रुख कर रहे हैं।

अलग-अलग निवेश की जरूरत नहीं

डुअल-एसेट पैसिव फंड्स में निवेश के बाद सोना और चांदी, दोनों में अलग-अलग निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। यानी आप फिजिकल सोना-चांदी खरीदे या अलग-अलग ईटीएफ में निवेश किए बिना दोनों की तेजी का फायदा उठा सकते हैं। इस नई कैटेगरी में चार बड़े फंड्स सामने आए हैं। इनमें कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ और मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ शामिल हैं।

1. कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

- यह फंड 20 अक्टूबर 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। निवेशक सिर्फ 100 से निवेश शुरू कर सकते हैं।
- इसका मकसद कोटक गोल्ड ईटीएफ और कोटक सिल्वर ईटीएफ में निवेश करके लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न कमाना है।
- यह एफओएफ एक खास क्वांटिटेटिव मॉडल का इस्तेमाल करता है। यह मॉडल सोने और चांदी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के आधार पर अपने आप तय करता है कि किस धातु में कितना पैसा लगाना है।

2. मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

इस फंड में शुरुआत में 50:50 का आवंटन होता है, लेकिन सोने-चांदी के अनुपात (गोल्ड-सिल्वर रेश्यो) व महंगाई, ग्लोबल ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती जैसे बड़े आर्थिक संकेतकों के आधार पर यह अनुपात बदलता रहता है। इस फंड का एक्सपेंस रेशियो 0.18% है और 7 अक्टूबर 2025 तक इसका एयूएम (एसेट्स अंडर मैनेजमेंट- फंड में कुल जमा राशि) 67 करोड़ रुपये था।

3. एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड सितंबर 2022 में लॉन्च हुआ था। यह भारत का सबसे पुराना डुअल-मेटल फंड है और हाल के दिनों में धातुओं की तेजी से इसने काफी फायदा उठाया है। इसमें 500 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं। यह फंड सोने और चांदी में लगभग बराबर हिस्सेदारी रखता है यानी 49.98% सोने में और 49.83% चांदी में। फंड ने पिछले एक साल में 57.9% का रिटर्न दिया है और पिछले तीन सालों में सालाना 31.97% का रिटर्न दिया है।

4. मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड अक्टूबर 2022 में लॉन्च हुआ था और इसने पिछले दो सालों में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। यह फंड 69.34% आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ में और 30.17% निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ में निवेश करता है। इसका एयूएम 244.32 करोड़ रुपये है, एक्सपेंस रेशियो 0.15% है और कोई एग्जिट लोड नहीं है। फंड ने पिछले एक साल में 59.7% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले दो सालों में सालाना 18.1% का सीएजीआर व पिछले तीन सालों में सालाना 11.6% का रिटर्न दिया है।

एफडी साइलेंट वेल्थ ट्रैप, सिर्फ इससे ही नहीं बन पाओगे अमीर दूसरे विकल्पों पर भी दें ध्यान

सुझाव | बिजनेस डेस्क

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में निवेश को ही असली निवेश समझते हैं तो आप गलत हो सकते हैं। एक एक्सपर्ट ने एफडी में निवेश को 'साइलेंट वेल्थ ट्रैप' बताया है। यानी एक ऐसा जाल जिसमें आप अमीर बनने के लिए जाते हैं, लेकिन अंत में फंस जाते हैं। क्योंकि सिर्फ एफडी में निवेश करके अमीर नहीं बना जा सकता। एक्सपर्ट ने इसका कारण भी बताया है। जानकारों का कहना है कि बड़ा फंड बनाने के लिए सिर्फ एफडी में निवेश करना सही नहीं है। उन्होंने उन लोगों को भी चेतावनी दी है जो एफडी में निवेश को ही असली निवेश समझ लेते हैं। वह बताते हैं कि यह जाल तब बनता है जब लोग अपना ज्यादातर पैसा एफडी में रखते हैं। वे महंगाई के असर और पैसे बढ़ाने के मौकों को नजरअंदाज कर देते हैं। एफडी में आपका पैसा तो सुरक्षित रहता है, लेकिन आपको रिटर्न बेहद कम मिलता है। इसलिए सिर्फ एफडी के भरोसे नहीं रहें। निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशे।

निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें, तभी बढ़ा पाएंगे पैसा

यह मिलता है ब्याज

आज एफडी की सालाना दरें लगभग 6.3% से 7% हैं, जबकि महंगाई करीब 2.1% है। आपकी असली कमाई लगभग 4.2 से 4.9% प्रति वर्ष है।' अगर आप 10 लाख रुपये एफडी में रखते हैं, तो एक साल बाद उसकी असली खरीदने की ताकत सिर्फ 10.42 लाख रुपये ही रह जाती है। इसका मतलब है कि आपका पैसा असल में बहुत कम बढ़ता है।

लोगों को एफडी पर भरोसा क्यों

भारत के लगभग 70% परिवार अभी भी एफडी को ही अपनी बचत का मुख्य जरिया मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों को इसमें पैसे की पूरी सुरक्षा का भरोसा मिलता है। साथ ही, उन्हें पैसे के लेन-देन की कम जानकारी होती है और वे बाजार के उतार-चढ़ाव से डरते हैं।

यह दी चेतावनी

उन्होंने चेतावनी दी कि सुरक्षा का यह भरोसा तभी तक सही है जब तक महंगाई कम रहती है। उन्होंने लिखा कि अगर महंगाई आपकी एफडी से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा हो जाती है तो आपकी असली दौलत कम होने लगती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वित्तीय सुरक्षा लापरवाही से नहीं, बल्कि निवेश को अलग-अलग जगह बांटने से मिलती है।

निवेश का तरीका बताया

एक संतुलित निवेश का तरीका सुझाया। इसमें फिक्स्ड डिपॉजिट के साथ शेयर बाजार (जिसने पहले 12 से 15% सीएजीआर का रिटर्न दिया है), डेट फंड (6.5 से 8%) और महंगाई से बचाने वाले निवेश जैसे सोना या आरईआईटीएस को शामिल करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि अपने निवेश को एक ही जगह न रखकर अलग-अलग जगह बांटें।

ये हैं निवेश के विकल्प

1. **शेयर बाजार (इक्विटी)- शेयर :** कंपनियों के हिस्सेदारी वाले शेयर।
   - **म्यूचुअल फंड :** पेशेवर प्रबंधन वाले फंड जो विविध शेयरों में निवेश करते हैं।
   - **ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड):** शेयर बाजार में ट्रेड होने वाले फंड।
2. **फिक्स्ड इनकम निवेश- फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी):** बैंकों में निश्चित अवधि के लिए जमा।
   - **बॉन्ड:** कंपनियों या सरकार द्वारा जारी कर्ज साधन।
   - **डेब्ट म्यूचुअल फंड:** बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।

ये हैं निवेश के विकल्प

3. **रियल एस्टेट- आवासीय संपत्ति :** घर या फ्लैट।
   - **वाणिज्यिक संपत्ति :** ऑफिस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स।
   - **आरईआईटी (रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट):** रियल एस्टेट में निवेश के लिए ट्रेडेबल यूनिट्स।
4. **सोना और कीमती धातुएं-भौतिक सोना :** सिक्के, बार।
   - **गोल्ड ईटीएफ :** सोने में निवेश के लिए एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
   - **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड:** सरकार द्वारा जारी।
5. **म्यूचुअल फंड- इक्विटी फंड:** शेयर बाजार में निवेश।
   - **हाइब्रिड फंड:** इक्विटी और डेट का मिश्रण।
   - **डेब्ट फंड:** फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।
6. पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड)- लंबी अवधि की बचत योजना जो कर लाभ देती है।
7. एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)- रिटायरमेंट के लिए पेंशन योजना।
8. यूएलआईपी (यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान)- निवेश और बीमा का मिश्रण।
9. क्रिप्टोकरेंसी- डिजिटल मुद्राएं जैसे बिटकॉइन, एथेरियम (उच्च जोखिम)।
10. एफडी और आरडी (रिकरिंग डिपॉजिट)- बैंकों में निश्चित आय के विकल्प।

खबर संक्षेप

दादा समाध्या वाले का वार्षिक मेला चौदह से

सोनीपत। भोले बाबा आश्रम प्रमुख सुनील बैरागी ने बताया कि दादा समाध्या वाले का वार्षिक मेला जागरण भंडारा लगाया जाएगा। 14 अक्टूबर को जागरण होगा और 15 को सुबह भंडारे का आयोजन होगा।

राम गली से दिनदहाड़े टेलर का स्कूटर चोरी

रोहतक। त्योहारी सीजन की शुरुआत में ही शहर में चोरी की वारदातें सामने आने लगी है। राम गली से शनिवार सुबह 10:00 बजे दिन दहाड़े दुकान के बाहर खड़ी स्कूटर चोरी हो गया। राम गली में सचिन टेलर के नाम से दुकान चला रहे पाड़ा मोहल्ला निवासी सचिन रोहिल्ला के अनुसार उसने अपनी एक्टिवा सुबह 10:00 बजे अपनी दुकान के आगे खड़ी की थी। इसके बाद वह अपनी दुकान पर कार्य करने में बिजी हो गया, कुछ देर बाद बाहर देखा तो स्कूटी गायब थी। इस दौरान बैंक के बाहर स्कूटर खड़ा दिखाई दिया।

पुरानी आईटीआई ग्राउंड में सफाई अभियान

रोहतक। नगर निगम द्वारा हरियाणा शहर स्वच्छता अभियान 2025 को सफल बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। शनिवार निगम द्वारा जनभागीदारी के तहत पुराने आईटीआई ग्राउंड में एक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखना रहा। अभियान में निगम के सफाई अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओ, एनजीओ आरडब्लूए तथा स्थानीय नागरिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

रिटायर्ड कर्मचारी संगठन की प्रदेश स्तरीय बैठक

रोहतक। रिटायर्ड कर्मचारी संगठन हरियाणा की प्रदेश स्तरीय बैठक शनिवार को रोडवेज भवन में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल यादव ने की जबकि संचालन प्रदेश महासचिव रणवीर शर्मा ने किया। बैठक में प्रदेशभर से जिला पदाधिकारियों, प्रधानों, सचिवों और कैशियरों ने भाग लिया।

राजकीय महाविद्यालय पीपली में प्रतियोगिता का आयोजन

मनोविज्ञान प्रतियोगिता में अर्चित ने मारी बाजी और आशीष द्वितीय

विद्यार्थियों को प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया

प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए विभाग को निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

राजकीय महाविद्यालय पीपली में प्राचार्या डॉ तराना नेगी के मार्गदर्शन में आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के तत्वाधान में मनोविज्ञान व गणित विभाग द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका आयोजन विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष में गीता शर्मा, डॉ. रेखा, सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान एवं डॉ. मनदीप कुमारी, सहायक प्राध्यापक गणित द्वारा किया किया गया। महाविद्यालय प्रभारी डॉ योगेश बाजवान ने विद्यार्थियों को इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए जागरूक किया तथा भविष्य में इस प्रकार की और प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए विभाग को निर्देश दिए। कार्यक्रम में निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ रजनीश कुमारी, गीता शर्मा, डॉ. संगीता कुमारी, डॉ. योगेन्द्र रांगी, डॉ. मंदीप व नीरा द्वारा निभाई गई।

खरखौदा। शिक्षकों संग भाषण प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी। *फोटो :हरिभूमि*

सोनीपत। विद्यार्थियों को सम्मानित करते संस्थापक, अध्यक्षक, निदेशक एवं अन्य स्टाफ।

ये रहे विजेता

गणित प्रतियोगिता में सान्या ने प्रथम, हर्षित ने द्वितीय, सौरव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मनोविज्ञान प्रतियोगिता में अर्चित ने प्रथम, आशीष ने द्वितीय तथा आशीष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

रंगारंग कार्यक्रमों की दी मनमोहक प्रस्तुति

सोनीपत। चातुर्मास में प्रकृति के विविध रंगो और संस्कृति का अनोखा संगम ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी के पावन प्रांगण में एक विशेष रंगारंग कार्यक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। जिसमें विद्यालय के सभी छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ ऋषिकुल वर्ल्ड एकेडमी के संस्थापक एसके शर्मा, अध्यक्ष नीरज शर्मा, निदेशक रीमा शर्मा, मुख्य अतिथि भूषण भाटिया और दीपमाला दुबे ने दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया। इस अवसर पर उनके साथ विद्यालय प्रधानाचार्या चंचल शर्मा, मीनू शर्मा भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने चातुर्मास में विभिन्न देवताओं के कर्तव्यों तथा पृथ्वी के संरक्षण में उनके दायित्वों को सुंदर नृत्य, गीत, कविताओं और नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से जीवंत किया। मंच पर प्रकृति, धर्म और कर्म के संतुलन का अत्यंत आकर्षक चित्रण देखने को मिला।

शिक्षा- स्वास्थ्य दोनों ही जीवन के आधार स्तंभः उत्सव दहिया

- अर्द्ध वार्षिक परीक्षा परिणाम के साथ लगाया स्वास्थ्य जांच शिविर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

गांव थाना खुर्द स्थित द स्टैनफोर्ड स्कूल में अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किए गए। इसके अलावा आयुर्वेद विभाग के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं स्थानीय नागरिकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के महत्व को प्रोत्साहित करना था। इस अवसर पर 220 लोगों ने पंजीकरण करवाया, जिनका स्वास्थ्य परीक्षण किया तथा निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधियां भी प्रदान की गईं।

खरखौदा। उपहार देकर सम्मानित करते प्रधानाचार्य संजीत कुमार नैन।

ये रहे मौजूद

विद्यालय चेयरमैन उत्सव दहिया ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों ही जीवन के आधार स्तंभ हैं। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विचारों का निवास होता है, और ऐसे आयोजन विद्यार्थियों व समाज दोनों के विकास में सहायक होते हैं। निर्देशिका पूजा उत्सव दहिया ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाते हैं, बल्कि विद्यालय को सामाजिक उत्तरदायित्व के पथ पर अग्रसर करते हैं। प्रधानाचार्य संजीत कुमार नैन ने विद्यार्थियों की उपलब्धियों और स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता का प्रतीक बताया। गणमान्य लोगों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान शिक्षिकाओं शालिनी, प्रियंका पंवार, भारती, स्विंकी, अंजली अंतिल आदि मौजूद रहे।

शिविर में जांचा छात्र-अभिभावकों का स्वास्थ्य

सोनीपत। स्वास्थ्य जांच शिविर के दौरान चिकित्सक जांच करते हुए। *फोटो :हरिभूमि*

सोनीपत। रोटरी क्लब ऑफ़ सोनीपत एजुकेशन सिटी और सोनीपत सिटी द्वारा एक निजी स्कूल में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें उजाला सिग्नस हस्पताल के चिकित्सकों ने अभिभावकों व छात्रों की स्वास्थ्य जांच की। रोटरी क्लब की प्रेसिडेंट उमा जैन व रितु कालरा, रोटरी क्लब के सदस्य सीए दीपक गुप्ता, सुरेश कालरा व सतपाल जैन उपस्थित रहे। डॉक्टरों की टीम में जनरल फिजिशियन डॉ. अंकित, दन्त रोग विशेषज्ञ डॉ. स्वाति, नेत्र योग विशेषज्ञ डॉ. सुरेश व स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. सरिता शामिल रही। स्वास्थ्य जांच के दौरान चिकित्सकों ने अभिभावकों व छात्रों को अनेक स्वास्थ्य संबंधी परामर्श दिए।

"मेंटल हेल्थ अवेयरनेस" विषय पर एक टॉक शो का आयोजन किया

- लायंस क्लब के सहयोग से हिंदू गर्ल्स कॉलेज में हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत में मनोविज्ञान विभाग, काउंसलिंग सेल एवं मेंटल हेल्थ अवेयरनेस सेल के संयुक्त तत्वावधान में तथा लायंस क्लब, सोनीपत के सहयोग से "मेंटल हेल्थ अवेयरनेस" विषय पर एक टॉक शो का आयोजन किया। उद्देश्य छात्राओं में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और जीवन में मानसिक संतुलन बनाए रखने के महत्व को समझाना था।

प्रतिभागी विद्यार्थियों के साथ अतिथिगण साथ में लायंस क्लब के पदाधिकारी।

ये रहे मौजूद

अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. बेबी रानी ने मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज की तेज रफ्तार जीवनशैली में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ आम होती जा रही हैं। इसलिए आत्म-देखभाल, सकारात्मक सोच और भावनात्मक अभिव्यक्ति का अभ्यास आवश्यक है। कार्यक्रम में मनोविज्ञान विभाग, काउंसलिंग सेल एवं मेंटल हेल्थ अवेयरनेस सेल की सदस्याएं डॉ. भतेरी, डॉ. सुनीता, कैप्टन नीतू तथा रितिका उपस्थित रहीं। कॉलेज की स्टाफ सदस्याएं डॉ. मीना, डॉ. मंजू, डॉ. ज्योति और डॉ. रितु के अलावा लायंस क्लब, सोनीपत के सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद रहे। अंत में परवीन रालेन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रधानमंत्री की रैली में पहुंचने का किया आह्वान

विधायक ने एक दर्जन से अधिक गांवों में ग्रामीण सभाओं को किया संबोधित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

विधायक पवन खरखौदा ने शनिवार को आगामी 17 अक्टूबर को एजुकेशन सिटी राई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की होने वाली रैली को लेकर क्षेत्र के एक दर्जन गांवों में ग्रामीण सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने गोपालपुर, सोहटी, कुंडल, रामपुर, गढ़ी निजामपुर, फिरोजपुर, झिंझौली, कतलूपुर, जटोला, सैदपुर, पिपली और खरखौदा में ग्रामीणों को संबोधित किया। अपने संबोधन में विधायक ने भाजपा सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों और योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

खरखौदा। जनसमूह को संबोधित करते विधायक पवन खरखौदा।

उन्होंने बताया कि खरखौदा हलके के प्रत्येक गांव में एक वर्ष के भीतर लाखों रुपये के विकास कार्य पूरे कराए गए हैं। पूर्व विधायक जयवीर सिंह द्वारा दिए गए बयानों पर प्रतिक्रिया दी।

जल्द पूरे होंगे कार्य

पवन खरखौदा ने कहा कि पूर्व विधायक ने कहा था कि भाजपा के विधायक केवल नारियल फोड़कर उद्घाटन करने का काम करते हैं, जबकि जिन कार्यों की बात की जा रही है, वे बारिश के कारण कुछ समय के लिए रोके गए हैं और शीघ्र पूरे होंगे। उन्होंने कहा कि जनता जानती है कि पूर्व विधायक के समय में कितने कार्य हुए थे और आज विकास किस गति से हो रहा है। उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि 17 अक्टूबर को एजुकेशन सिटी राई में होने वाली प्रधानमंत्री की रैली में अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर इस विकास यात्रा का हिस्सा बनें।

खरखौदा। प्रदर्शनी में लगी स्टालों का अवलोकन करते शिक्षक।

दिवाली बाजार का किया आयोजन

खरखौदा। कन्या महाविद्यालय में प्राचार्या डॉ. तराना नेगी के निर्देशन व इंचार्ज डॉ. किरण सरोहा के नेतृत्व में सांस्कृतिक प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. सुमिता की देखरेख में दिवाली बाजार का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ डॉ. किरन सरोहा ने रिबन काटकर किया। इस दिवाली बाजार का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता, क्रय-विक्रय कौशल और आत्मविश्वास विकसित करने के साथ- साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति से परिचित कराना था। इस अवसर पर डॉ किरण सरोहा ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर अत्यंत प्राचीन और विश्व प्रसिद्ध है, इसको संजोकर रखना हमारा दायित्व है। इस दिवाली बाजार में छात्राओं के परिवार जनों को आमंत्रित किया गया। सभी आगंतुकों और छात्राओं ने अपनी सुविधा अनुसार खरीदारी की और खाने का आनंद उठाया। डॉ. किरण सरोहा के साथ सभी संबंधित सेल्स क्लब प्रभारियों ने दिवाली बाजार में विभिन्न स्टॉल्स का अवलोकन किया और छात्राओं के कला कौशल की प्रशंसा की।

सेंट्रल ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन का सम्मेलन संपन्न

- सरकारों पर श्रम कानून कमजोर करने का लगाया आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सेंट्रल ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) जिला कमेटी सोनीपत का 15वां जिला सम्मेलन रविवार को छोटूराम धर्मशाला में संपन्न हुआ। सम्मेलन में पर्यवेक्षक के रूप में सीटू हरियाणा के उपप्रधान वीरेंद्र मलिक, श्रद्धानंद सोलंकी, रणबीर मलिक और सिल्क राम मलिक मौजूद रहे। सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्रद्धानंद सोलंकी ने कहा कि सीटू की स्थापना 1970 में कोलकाता में हुई थी और सोनीपत संगठनात्मक रूप से एक मजबूत इकाई रहा है।

सोनीपत। जिला सम्मेलन के दौरान उपस्थित सदस्य एवं पदाधिकारीगण।

एकजुट का किया आह्वान

आरोप लगाया कि केंद्र और राज्य सरकारें यूनियन विरोधी नीतियों पर चल रही हैं। श्रम कानूनों में संशोधन कर मजदूरों के संगठन बनाने के अधिकारों को सीमित किया जा रहा है, जिससे कर्मचारियों में निराशा का माहौल है। सोलंकी ने कहा कि मजदूरों को जाति, धर्म और क्षेत्र के नाम पर बांटा जा रहा है और उन्हें रोजी-रोटी की लड़ाई से भटकाया जा रहा है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी यूनियनों को एकजुट होकर इन परिस्थितियों का मुकाबला करना होगा।

राज्य स्तरीय होगा सम्मेलन

कामरेड आनंद शर्मा ने नई जिला कमेटी को शुभकामनाएं दीं और यूनियन को और मजबूत बनाने का आह्वान किया। इसके बाद कामरेड वीरेंद्र मलिक की अध्यक्षता में जिला कमेटी का चुनाव कराया गया। नई कमेटी में अनीता (आशा वर्कर यूनियन) को प्रधान, सोना देवी (आंगनवाड़ी यूनियन) को उपप्रधान, रेखा देवी (मिड डे मील यूनियन) को सह उपप्रधान, सुनीता (आशा यूनियन) को सचिव, राजेश (ग्रामीण सफाई यूनियन) को सह सचिव, नवीन (ठेका सफाई यूनियन) को कोषाध्यक्ष चुना गया। समापन सीटू हरियाणा के उपप्रधान वीरेंद्र मलिक ने किया। उन्होंने बताया कि 25 से 27 अक्टूबर तक करनाल में सीटू हरियाणा का राज्य स्तरीय सम्मेलन होगा और पहले दिन एक विशाल रैली आयोजित की जाएगी। उन्होंने सभी मजदूरों से रैली में बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की।

गोहाना। अभिभावकों के साथ विचार साझा करते शिक्षकगण। *फोटो : हरिभूमि*

स्वाध्याय विद्यार्थी की गुणवत्ता का आधार

गोहाना। अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित गीता विद्या मंदिर, गोहाना में आचार्यों एवं अभिभावकों की बैठक प्रबंध समिति के अध्यक्ष तिलक राज रेल्हन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में अर्धवार्षिक परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएं अभिभावकों को दिखाई गईं। उत्तर पुस्तिकाओं में विद्यार्थियों की कमियों पर विस्तार से चर्चा की गई व समाधान के सुझाव दिए गए। अध्यक्ष तिलक राज रेल्हन ने विद्यार्थियों को स्वाध्याय के प्रति अधिक जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी को जीवन में सफल बनने के लिए खुद की योग्यता को पहचानना जरूरी है। स्वाध्याय से विद्यार्थी स्वयं को पहचानने में सक्षम बनेगा और उसकी गुणवत्ता बढ़ेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य अश्विनी कुमार ने की। प्राचार्य ने बच्चों के खानपान, व्यवहार व मोबाइल फोन से दूरी बनाए रखने की बात कही।

धर्म-कर्म | पुत्र सुख और कुशलता के लिए माताएं रखेंगी अहोई अष्टमी का व्रत

करवा चौथ के चार दिन बाद और दीपावली से आठ दिन पूर्व आता है व्रत

13 अक्टूबर को मनाई जाएगी अहोई अष्टमी तारों के दर्शन के बाद होगा व्रत का पारण

माताएं उषाकाल भोर से लेकर गोधूलि बेला तक निर्जल उपवास रखेंगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

पुत्र की दीर्घायु, सुख और समृद्धि की कामना के लिए माताएं 13 अक्टूबर को अहोई अष्टमी का व्रत रखेंगी। यह व्रत करवा चौथ के चार दिन बाद और दीपावली से आठ दिन पूर्व आता है। उत्तर भारत में करवा चौथ की भांति अहोई अष्टमी भी अत्यंत लोकप्रिय पर्व है। इसे अहोई आठें के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह व्रत अष्टमी तिथि को रखा जाता है, जो माह का आठवां दिन होता है।

इस दिन माताएं उषाकाल यानी भोर से लेकर गोधूलि बेला तक निर्जल उपवास रखती हैं। कई महिलाएं पूरे दिन अन्न और जल ग्रहण नहीं करतीं और तारों के दर्शन के बाद ही व्रत का पारण करती हैं। अहोई अष्टमी को विशेष रूप से उन माताओं के लिए शुभ माना गया है जो अपने पुत्रों की लंबी आयु और कुशलता की कामना करती हैं। यह व्रत मातृ स्नेह, श्रद्धा और संकल्प का प्रतीक माना जाता है। प्रदेशभर के साथ साथ सोनीपत में भी अहोई अष्टमी को लेकर महिलाओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। मंदिरों और घरों में विशेष सजावट की तैयारी शुरू हो चुकी है। महिलाएं पूजा सामग्री जुटाने में व्यस्त हैं।

विशेष मंत्रों का जाप

माता पार्वती से जुड़ी हुई है कथा। किंवदंती के अनुसार, अहोई अष्टमी व्रत की कथा माता पार्वती से जुड़ी है, जिन्होंने अपने पुत्रों के कल्याण के लिए यह व्रत किया था। तभी से यह परंपरा चली आ रही है कि महिलाएं इस दिन अहोई माता की पूजा कर अपने पुत्रों की रक्षा और उन्नति की कामना करती हैं। पूजा के दौरान दीवार या पट पर अहोई माता, सेई और सात पुत्रों का चित्र बनाया जाता है, और संतान की दीर्घायु के लिए विशेष मंत्रों का जाप किया जाता है।

शाम 5:53 से पूजा का मुहूर्त

शाम 5:53 से होगा पूजा का मुहूर्त डॉ. मनमोहन मिश्रा के अनुसार, इस वर्ष अहोई अष्टमी सोमवार, 13 अक्टूबर को मनाई जाएगी। पूजा का शुभ मुहूर्त शाम 5:53 बजे से 7:08 बजे तक रहेगा, जिसकी अवधि 1 घंटा 15 मिनट की होगी। तारों के दर्शन का समय शाम 6:17 बजे का रहेगा, जबकि सोनीपत में चंद्रोदय रात्रि 11:20 बजे होगा। अष्टमी तिथि का आरंभ 13 अक्टूबर को दोपहर 12:24 बजे से होगा और यह 14 अक्टूबर को सुबह 11:09 बजे तक रहेगी।

ग्राम विकास के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

सूर्या साधना स्थली झिंझौली में पांच दिवसीय कार्यकर्ता दक्षता वर्ग का आयोजन किया गया। जिसमें 20 क्षेत्रों से 41 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। वर्ग का उद्देश्य पिछले तीन माह की कार्यों की समीक्षा और आगामी तीन माह की कार्य योजना बनाना है। साथ ही कुछ नए विषयों की जानकारी दी गई। दक्षता वर्ग के उद्घाटन सत्र में हरियाणा प्रांत के ग्राम विकास प्रमुख अनूप ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। इस सत्र में रोहतक जिले के भाली गाँव की एक विकसित आदर्श गांव की विकास यात्रा की जानकारी दी गई। किस प्रकार कठिनाईयों का सामना करते हुए गांव को विकसित किया जा सकता है। इसी क्रम में वर्ग के बीच मे एक दिन शैक्षणिक भ्रमण भी हुआ, जिसमें इंडो - इस्राइल के सामुहिक प्रयास से भारत का पहला इंडो - इस्राइल सब्जी उत्कृष्ट केंद्र घरौंडा, करनाल का भ्रमण किया। जहां पर सब्जी के विभिन्न प्रकार का अच्छे तरीका से उत्पादन किया जाता है।

खरखौदा। आयोजकों के साथ दक्षता वर्ग के प्रतिभागी कार्यकर्ता।

खबर संक्षेप

खिलाड़ी का स्वागत करते हुए प्रताप स्कूल प्रबंधन। फोटो : हरिभूमि

फेंसिंग स्पर्धा में प्रताप स्कूल के तरुण सिंह ने जीता कांस्य पदक

खरखौदा। फरीदाबाद में आयोजित हरियाणा स्कूल राज्य स्तरीय फेंसिंग चैम्पियनशिप में प्रताप स्कूल के खिलाड़ी तरुण सिंह ने (अंडर-17 वर्ग) में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक हासिल किया। विद्यालय में पहुंचने पर संस्थापक सतप्रकाश दहिया, एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया, प्रधानाचार्या दया दहिया, डॉ दीपिका दहिया ने भव्य स्वागत किया। प्रधान वेदप्रकाश दहिया व द्रोणाचार्य अवार्डी ओमप्रकाश दहिया ने तरूण को विशेष रूप से बधाई दी। संस्थापक सतप्रकाश दहिया ने कहा कि ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी भविष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन कर सकते हैं। प्राचार्या दया दहिया ने कहा फेंसिंग जैसे खेलों में बच्चों की भागीदारी यह दर्शाती है कि नई पीढ़ी अब परंपरागत खेलों के साथ-साथ नए खेलों में भी अपनी पहचान बना रही है। उन्होंने कहा कि स्कूल में खिलाड़ियों के लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। इसका अच्छा परिणाम मिल रहा है। स्कूल के छात्र खेलों में नाम कमा रहे है।

भारतीय किसान यूनियन एकता सिद्धूपुर ने किया मंडी का दौरा

किसान बोले- कभी नमी तो कभी मशीन खराब होने के बहाने टाल रहे धान की खरीद

- किसानों ने बताया कि वे पिछले एक सप्ताह से धान लेकर मंडी में बैठे हैं, लेकिन यहां न तो बिजली की सुविधा है और न ही पीने के पानी की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

भारतीय किसान यूनियन एकता सिद्धूपुर की टीम ने शनिवार को सोनीपत अनाज मंडी का दौरा कर किसानों की समस्याओं को सुना और मौके पर हैफेड, वेयरहाउस व मार्किट कमेटी के अधिकारियों को बुलाकर कई मुद्दों का समाधान कराया। किसानों ने बताया कि वे पिछले एक सप्ताह से धान लेकर मंडी में बैठे हैं, लेकिन यहां न तो बिजली की सुविधा है और न ही पीने के पानी की।

साथ ही कभी बारदाने की कमी तो कभी मॉइस्चर मशीनों की खराबी बताकर खरीद टाल दी जाती है। किसान नेताओं ने कहा कि मंडी में पड़ी कई धान की ढेरियों में मॉइस्चर 17 से नीचे है, फिर भी खरीद नहीं हो रही। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री द्वारा 22 सितंबर से खरीद शुरू करने की घोषणा के बावजूद 19 दिन बीत जाने पर भी खरीद प्रक्रिया सुचारू नहीं हुई है।

अधिकारियों के साथ मंडी का दौरा करते किसान नेता फोटो : हरिभूमि

खरीद में आ रही समस्याओं को दूर नहीं किया तो आंदोलन

खरखौदा। भारतीय किसान यूनियन एकता सिद्धूपुर की टीम ने खरखौदा की अनाज मंडी का दौरा किया। मौके पर हैफेड, वेयरहाउस एवं मार्किट कमेटी के अधिकारियों को मौके पर बुलाकर किसानों को आ रही समस्याओं का समाधान कराया गया। अनाज मंडी में किसानों ने बताया कि वे पिछले 1 हफ्ते से धान लेकर मंडी में आये हुए हैं। कभी बारदाने की समस्या बता दी जाती है, तो कभी मॉइस्चर मशीनों में दिक्कत बता दी जाती है। किसान नेताओं ने बताया कि मंडी में पड़े धान की कई ढेरियों में नमी 17 से काफी नीचे है, लेकिन उसके बावजूद खरीद नहीं हो रही है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सैनी ने ऐलान किया था कि 22 सितंबर से खरीद शुरू होगी, लेकिन 19 दिन बीत जाने के बावजूद सुचारू रूप से खरीद नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को प्रदेश की मंडियों का दौरा करना चाहिए, ताकि उन्हें जमीनी हकीकत पता लग सके। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने कहा कि जल्द ही सभी समस्याओं का समाधान कर दिया जाएगा। मंडी में खरीद सुचारू रूप से नहीं हो पा रही है, मौके पर मिलर्स या उनका कोई भी नुमाइंदा नहीं मिला। उसके बाद किसान यूनियन के प्रतिनिधिमंडल ने मंडी प्रधान नरेश दहिया, मार्किट सेक्रेटरी एवं वेयरहाउस इंस्पेक्टर के साथ मंडी का दौरा किया और सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडों को पूरा करने वाली धान की ढेरियों की खरीद सुनिश्चित कराई। किसान यूनियन के नेताओं ने कहा कि यदि धान की खरीद में आ रही समस्याओं को दूर नहीं किया गया तो वे बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होंगे। जिसकी जम्मेदारी सरकार एवम प्रशासन की होगी। इस मौके पर बेढी दहिया, बिजेंद्र मलिक, राजबीर लोहचब, बिजेंद्र दहिया, देशपाल दहिया, चुन्नी हलालपुर, रामकुंवर दहिया, प्रवीण दहिया, जोगिंद्र खांडा, अत्तर सिंह प्रधान, राजसिंह दहिया, समुंद्र तोमर, शक्ति दहिया, बुधराम कोहाड़ आदि मौजूद रहे।

अधिकारियों को मौके पर बुलाकर करवाया समस्याओं का समाधान

सरकार नहीं ले रही किसानों की सुध

नेताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री को सभाओं में चुटकुले सुनाने की बजाय मंडियों का दौरा कर किसानों की वास्तविक स्थिति का जायजा लेना चाहिए। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि दोपहर दो बजे तक किसानों की सभी समस्याओं का समाधान कर दिया जाएगा। किसान यूनियन नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही धान खरीद में आ रही दिक्कतों को दूर नहीं किया गया तो वे बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होंगे, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन और सरकार की होगी। आज के दौरे में बेढी दहिया, बिजेंद्र मलिक, राजबीर लोहचब, बिजेंद्र दहिया, देशपाल दहिया, चुन्नी हलालपुर, रामकुंवर दहिया, प्रवीण दहिया, जोगिंदर खांडा, अत्तर सिंह प्रधान, राजसिंह दहिया, समुंदर तोमर, शक्ति दहिया और बुधराम कोहाड़ व अन्य मौजूद रहे।

विकास कार्यों का शुभारंभ करते हुए विधायक साथ में मेयर एवं अन्नू।

वार्ड 1 में 3.73 करोड़ रुपये से होंगे विकास कार्य

विधायक और मेयर ने किया शिलान्यास

- सीवरेज लाइन, स्टॉर्म वाटर लाइन और पेयजल आपूर्ति के लिए बिछाई जाएगी पाइपलाइन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

विधायक निखिल मदान और मेयर राजीव जैन शनिवार को वार्ड नंबर 1 में 3 करोड़ 73 लाख रू की लागत से होने वाले विकास कार्यों का शिलान्यास किया। विधायक निखिल मदान ने बताया कि जटवाड़ा खिजर पार्क के साथ से हनुमान नगर तक सीवरेज और पेयजल लाइन बिछाने का कार्य लगभग 80 लाख रुपए की लागत से किया जाएगा। साथ ही जटवाड़ा चुंगी से सीएसडी कैंटीन (फ्लाइओवर तक) सड़क के दोनों और स्टॉर्म वाटर लाइन बिछाई जाएगी और फुटपाथों पर टाइल लगाई जाएगी। इस कार्य में लगभग 1 करोड़ 74 लाख रु की लागत आएगी।

दीपावली मिलन समारोह का निमंत्रण भी दिया

विधायक निखिल मदान ने रविवार को यूनीक गार्डन में होने वाले दीपावली मिलन समारोह का निमंत्रण भी दिया। मेयर राजीव जैन ने बताया कि लगभग 18 लाख रुपये की लागत से कुम्हार गेट से चंदन पेट्रोल पम्प तक नाले में स्टॉर्म वाटर पाईप लाइन बिछाई जाएगी और एक शौचालय बनाया जाएगा। साथ ही लगभग 21 लाख रु से नानक की चक्की वाली गली में सीवरेज लाइन बिछाकर सीसी से पक्का किया जाएगा। इसके साथ ही लगभग 80 लाख रुपए की लागत से शंकर की कुई से गोल्डन गेट स्कूल तक सीवरेज लाइन बिछाई जाएगी। इस मौके पर निगम पार्षद हरि प्रकाश सैनी, श्यामवीर नंबरदार, महताब खत्री, विनोद खत्री, महेश शर्मा, आशीष दहिया, संजू खत्री, दीपक खत्री, सुमित वर्मा, पवन तनेजा, श्री कृष्ण, ओम प्रकाश, यशपाल प्रधान, रितेश, योगेश, कुलदीप, सूबे सिंह, बिजेंदर आदि लोग मौजूद रहे।

गोहाना जिला में शामिल किए की संभावना पर विरोध जताते क्षेत्रवासी

खरखौदा संघर्ष समिति की बैठक

खरखौदा। खरखौदा संघर्ष समिति की बैठक पृथी सिंह की अध्यक्षता में जागृति स्थल पर हुई। जिसमें खरखौदा क्षेत्र को सोनीपत जिले में ही रखे जाने के बारे में मुख्यमंत्री से स्पष्टीकरण की माँग रखी गई। फैसला लिया गया कि खरखौदा क्षेत्र के गाँव- गाँव में जनसंपर्क अभियान चलाया जाएगा। साथ ही जल्दी ही एक बहुत बड़ी पंचायत का आयोजन किया जाएगा और किसी भी हालात में खरखौदा उपमंडल को प्रस्तावित नए गोहाना जिले में शामिल नहीं होने दिया जाएगा। बैठक शामिल व्यक्तियों ने चेताया कि इसके लिए क्षेत्र के लोग किसी भी कुर्बानी से पीछे नहीं हटेंगे। इस मौके पर राम कंवार कुण्डल, सिकंदर मटिंडू, महेंद्र नक्कलोई, हंसराज राणा फिरोजपुर, विकेश दहिया रोहणा, राजकुमार सिसाना, बिजेंद्र तुर्कपुर, जोरावर बरोना, पप्पू गढ़ी सिसाना व अन्य मौजूद रहे।

गन्नौर में पराली जलाने का एक भी मामला नहीं

- आधुनिक निगरानी प्रणाली और जागरूकता अभियान ने दिखाया असर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

हरियाणा सरकार द्वारा पराली जलाने पर रोक लगाने के लिए उठाए गए ठोस कदम के बाद गन्नौर में धान की फसल के अवशेष जलाने की घटनाओं में बीते वर्ष की तुलना में शत- प्रतिशत तक की कमी दर्ज की गई है। सरकार की सख्त निगरानी, आधुनिक तकनीकी उपकरणों के उपयोग और किसानों को वैकल्पिक उपाय अपनाने के लिए निरंतर प्रेरित करने के परिणामस्वरूप संभव हुई है।

खंड कृषि अधिकारी आनंद श्योराण ने बताया कि पिछले साल तीन लोकेशन मिली थी जिसमें से एक फेक पाई गई थी एक किसान पर 7500 रुपये के जुर्माना लगाया गया था जबकि एक किसान पर मुकदमा दर्ज करवाया गया था,लेकिन इस बार एक भी मामला पराली जलाने का नही आया ।

अवशेष प्रबंधन की सफलता

उन्होंने उन्होंने बताया कि इस बार फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपग्रह आधारित निगरानी प्रणाली, ड्रोन सर्विलांस और कंट्रोल रूम की मदद से पराली जलाने की हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही थी। उन्होंने बताया कि उपमंडल स्तर पर विशेष टीमें गठित की गईं, जिन्होंने मौके पर जाकर किसानों को जागरूक किया और उन्हें आधुनिक कृषि यंत्रों के प्रयोग के लिए प्रेरित किया। डॉ आनंद ने बताया कि सरकार ने किसानों को पराली न जलाने के लिए सब्सिडी पर स्ट्रॉ रीपर, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, रोटावेटर और बेलर मशीनें उपलब्ध करवाईं। इसके साथ ही फसल अवशेष प्रबंधन योजनाओं के तहत ग्राम स्तर पर पंचायतों और कृषि अधिकारियों के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम चलाए गए।

ठेका सफाई कर्मचारियों ने मांगों को लेकर की नारेबाजी

सोनीपत। ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच, मूल निवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ व सहयोग बलि सेना यूनियन की हड़ताल शनिवार को लगातार ग्यारहवें दिन भी जारी रही। हड़ताल की अध्यक्षता उपप्रधान रविंद्र ने की, जबकि संचालन प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मुकेश कर्मा ने किया। मुकेश कर्मा ने कहा कि ठेके पर कार्यरत सभी सफाई कर्मचारी काम छोड़कर हड़ताल पर हैं, लेकिन अब तक निगम अधिकारी, मेयर और विधायक किसी ने भी उनकी समस्याओं की सुध नहीं ली। उन्होंने आरोप लगाया कि सफाई कर्मचारियों को लगातार आश्वासन और जुमले देकर गुमराह किया जा रहा है, जबकि उनकी मुख्य मांगों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।कोषाध्यक्ष अनिल ने बताया कि यूनियन के प्रतिनिधि मुकेश टांक, सावन कुमार, युधिष्ठिर और बलि सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष जसविंद्र पहलवान शनिवार को कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी से मुलाकात के लिए चंडीगढ़ गए हैं। उन्होंने कहा कि यदि बातचीत से समाधान नहीं निकला, तो यूनियन 13 अक्टूबर 2025 से सोनीपत से चंडीगढ़ मुख्यमंत्री आवास तक पैदल यात्रा शुरू करेगी। कर्मचारियों ने दोहराया कि उनकी एक ही मांग है—ठेका व्यवस्था समाप्त कर सभी ठेका सफाई कर्मचारियों को नगर निगम के रोल पर लिया जाए या उन्हें कौशल रोजगार निगम में समायोजित किया जाए। आज के धरने में सैकड़ों कर्मचारी शामिल रहे। उपस्थितों में अमित, प्रवीण, सुरेश, सोनू, रितेश, राहुल, ज्योति, पूनम, सुषमा, काजल, प्रमिला और पिंकी सहित अनेक कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रतिभागी विजेता छात्र विद्यालय के निदेशक अजय यादव एवं प्राचार्य अरुण गौतम के साथ ।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में चेतना हाउस रहा प्रथम

गन्नौर। चाइल्ड केयर इंटरनेशनल स्कूल, गन्नौर में अंतर-गृह विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के सभी गृहों — चेतना, प्रगति, स्मृति और अनुराग हाउस के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने ज्ञान, तर्कशक्ति एवं तेज सोच का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कड़े मुकाबले के बाद चेतना हाउस ने प्रथम स्थान, प्रगति हाउस ने द्वितीय स्थान, स्मृति हाउस ने तृतीय स्थान तथा अनुराग हाउस ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।
विद्यालय के निदेशक अजय यादव एवं प्राचार्य अरुण गौतम ने विजेता विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि, जिज्ञासा और अनुसंधान की भावना को प्रोत्साहित करती हैं। उन्होंने कहा कि ज्ञान आधारित प्रतिस्पर्धाएं छात्रों के आत्मविश्वास और रचनात्मक सोच को भी मजबूत करती हैं।
इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकाएं नीलम, प्रियंका, सोनिका, ललिता तथा साहिल सहित अन्य शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बाल भवन स्कूल के शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण संचालक शालिनी जैन व स्कूल निदेशक जय भारत गुप्ता ।

'कला एकीकरण' विषय पर सीबीएसई प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

गन्नौर। बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल में कला एकीकरण (आर्ट) विषय पर सीबीएसई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्र का उद्देश्य शिक्षकों को यह समझाना था कि किस प्रकार कला को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करके विद्यार्थियों की रचनात्मकता, रुचि और समझ को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। प्रशिक्षण का संचालन शालिनी जैन ने करते हुए बताया कि किस तरह संगीत, चित्रकला, नाट्य और नृत्य जैसी कलाओं को गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और भाषा जैसे विषयों से जोड़ा जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कला आधारित शिक्षण की तकनीकों से अवगत कराया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य जय भारत गुप्ता और समन्वयक नेहा सिंधु ने शालिनी जैन को प्रशिक्षण के लिए धन्यवाद दिया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

डीक्रस्ट मुरथल में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

योगेश्वर दत्त ने कहा -खिलाड़ी किसी भी देश की सबसे बड़ी धरोहर

खेल हमें जीवन के संघर्ष में जीतना सीखाते हैं : योगेश्वर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,मुरथल की वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता के विधिवत उद्घाटन अवसर पर ओलंपियन योगेश्वर दत्त मुख्य अतिथि थे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षा कुलगुरु प्रो.श्री प्रकाश सिंह ने की।

विजेताओं को पुरस्कृत भी किया। इस अवसर पर प्रो. सुरेश वर्मा- डीन छात्र कल्याण, डायरेक्ट स्पोर्ट्स- डॉ. बीरेंद्र हुड्डा, एनसीसी कॉर्डिनेटर डॉ. प्रदीप व खेल विश्वविद्यालय की खेल समिति से संबंधित शिक्षक एवं स्टाफ व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे।

योगेश्वर दत्त ने कहा कि खिलाड़ी किसी भी देश की धरोहर होते हैं। कौन सा देश कितना शक्तिशाली है इस बात का पता, उस के देश के ओलंपिक में पदकों से पता चलता है। उन्होंने कहा कि खेल हमें विपरीत परिस्थितियों से लड़ना सिखाते हैं।

विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए योगेश्वर दत्त साथ में अन्य। फोटो : हरिभूमि

बिना परिश्रम के आप इतिहास नहीं लिख सकते

ओलंपिक में पदक विजेता योगेश्वर दत्त ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि बिना परिश्रम के आप इतिहास नहीं लिख सकते। खिलाड़ी विपरीत परिस्थितियों में हार नहीं मानता। खेल निदेशक डा. बिरेंद्र सिंह हुड्डा ने बताया कि विश्वविद्यालय को 6 हाऊस में बांटा गया था। पहले दिन क्रिकेट में महाराणा प्रताप, पुरुषों की वॉलीबॉल प्रतिस्पर्धा में महाराणा प्रताप, महिलाओं की बास्केटबॉल में शिवाजी, पुरुषों की बास्केटबॉल में महाराणा प्रताप, पुरुषों की फुटबॉल में, भगत सिंह, पुरुषों की कबड्डी में चंद्रशेखर, पुरुषों की बैडमिंटन में शिवाजी, महिलाओं की बैडमिंटन में शिवाजी, पुरुषों की टेबल टेनिस में शिवाजी, महिलाओं की टेबल टेनिस में सुभाष चंद्र, पुरुषों की चैस में भगत सिंह, पुरुषों की टेनिस में महाराणा प्रताप हाउस प्रथम रहे।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

नहर की पटरी पर खड़ी बाइक चोरी, केस दर्ज

गोहाना। लाठ गांव के नजदीक नहर की पटरी पर खड़ी किसान की बाइक चोरी हो गई। पुलिस ने चोरी का केस दर्ज कर लिया। मूलरूप से रोहतक के समचाना गांव निवासी अंकित ने पुलिस को बताया कि वह अपने मामा के पास लाठ गांव में रहता है। वह 8 अक्टूबर की सायं करीब साढ़े 5 बजे वह बाइक लेकर नहर की तरफ अपने खेतों में गया था।

जीवन में सफलता के लिए गुरु की आज्ञा का पालन करें : उधम

गोहाना। कटवाल गांव स्थित सरस्वती विद्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य उधम सिंह ने कहा कि माता-पिता के बाद गुरु ही विद्यार्थी का सच्चा पथ प्रदर्शक होता है। जो शिष्य अपने गुरु का सम्मान करेगा और उनके बताए मार्ग पर चलेगा वह जीवन में अवश्य सफल होगा। हर विद्यार्थी को अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए जीवन में आगे बढना चाहिए। प्राचार्य उधम सिंह ने कहा कि गुरु-शिष्य का संबंध एक गहरा और पवित्र रिश्ता है। यह रिश्ता केवल ज्ञान देने-लेने तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह आत्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए होता है। इस संबंध में गुरु शिष्य को जीवन का मार्ग दिखाते हैं, जबकि शिष्य गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा रखता है। यह संबंध आपसी प्रेम और विश्वास पर आधारित होता है और इसे पिता-पुत्र या माता-पुत्र के रिश्ते से भी गहरा माना जाता है। जीवन में सफल बनने के लिए गुरु की आज्ञा का पालन करें। गुरु की आज्ञा का पालन करने से अहंकार का नाश होता है।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 12 अक्टूबर 2025
P-1

दीपावली सदियों से धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाई जा रही है। लेकिन अब इसका स्वरूप राष्ट्रीय, आर्थिक और भावनात्मक एकता का रूप ले चुका है। दीपावली की चमक अब केवल तेल के दीयों में नहीं रही बल्कि डिजिटल स्क्रीन, वैश्विक समारोहों, आर्थिक गतिविधियों में भी हर जगह भारत की सांस्कृतिक शक्ति के रूप में झिलमिलाती है।

धर्म-संस्कृति-आस्था के साथ अर्थव्यवस्था का महापर्व दीपावली

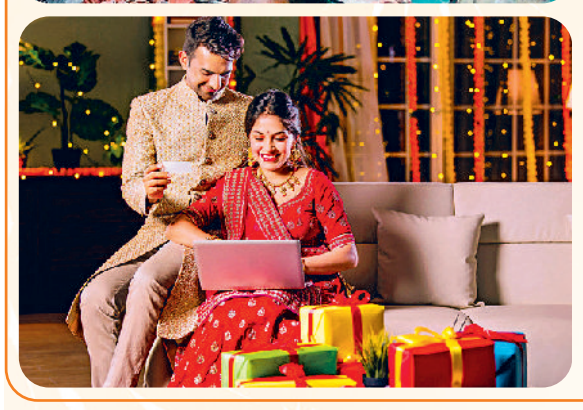

{ आवरण कथा }
शैलेंद्र सिंह

दीपावली अगर पहले के दौर में केवल दीप और पूजा का पर्व था, तो आज यह डिजिटल भारत की संपन्नता और सशक्ति का प्रतीक बन चुकी है। आज हर राज्य, हर भाषा और हर वर्ग के लोग अलग-अलग तरीके से दीपावली को जोरदार तरीके से सेलिब्रेट कर रहे हैं। यह भारत के किसी भी अखिल भारतीय उत्सव का सबसे बड़ा सिंबल है। एक जमाना था, जब गांवों में मिट्टी के दीयों से रोशनी की कतार झिलमिलाती थी। आज उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, देश के सभी शहरों में एलईडी की इंद्रधनुषी झालरें दीपावली के मौके पर संपन्नता की अठखेलियां करती हैं। साथ ही ऑनलाइन दुनिया में डिजिटल ग्रीटिंग्स की भरमार है। दरअसल, दिवाली अब हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक वजूद का इंजन बन चुकी है।

होगी कई लाख करोड़ की खरीदारी

दीपावली अब केवल आस्था का त्योहार नहीं बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का महापर्व है। यकीन न आए तो कुछ आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं। साल 2024 की दीपावली तिमाही में खरीदारी तकरीबन 4.5 लाख करोड़ तक पहुंच गई थी। इस साल अनुमान है कि यह आंकड़ा 6 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। मतलब बिहार जैसे राज्य के लगभग दो सालों का समूचा सालाना बजट के बराबर दिवाली के मौके पर खरीदारी में खर्च हो जाएगा। अकेले ई-कॉमर्स सेक्टर में ही दीपावली के आस-पास अब तक 90 हजार करोड़ की ऑनलाइन बिक्री हो चुकी है। उम्मीद है कि यह तकरीबन पौने दो से दो लाख करोड़ तक पहुंचेगी। ऑटो मोबाइल्स, रियल एस्टेट, इलेक्ट्रॉनिक और ज्वेलरी जैसे क्षेत्र में इस सीजन बिक्री के नए मानदंड रचे जाने हैं। मतलब यह कि दिवाली अब भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कती नब्ज बन चुकी है।

डिजिटल कंपनियों को भी रहता है इंतजार

यह त्योहार अब केवल धार्मिक नहीं, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता का भी बड़ा अवसर बन चुका है। आज दीपावली एक किसान से लेकर स्टार्टअप फाउंडर तक के लिए आर्थिक रोशनी की नई उम्मीद बनकर आती है। इस डिजिटल युग में दीपावली सिर्फ घरों या मंदिरों तक नहीं सीमित बल्कि सोशल मीडिया, डिजिटल क्रिएटिविटी और तकनीकी नवाचार का त्योहार बन गई है। 'हैप्पी दीपावली' कहना या लिखना, हर साल दुनियाभर के ट्रेंडिंग टॉपिक्स में शामिल रहने वाला सबसे हॉट विषय होता है। गूगल और एप्पल जैसी कंपनियां दीपावली का महीनों पहले से इंतजार करती हैं। इस मौके पर विशेष डूडल और थीम्स जारी करती हैं। डिजिटल आर्टिस्ट और कंटेंट क्रिएटर्स दीपावली को भारतीय पहचान का वैश्विक प्रतीक मानते हैं। भारत के स्टार्टअप इस मौके पर विशेष फेस्टिव कैंपेन लांच करते हैं जैसे- मेड इन इंडिया जिसमें एक नया संदेश छिपा होता है। कहने का मतलब यह कि दीपावली अब घर-घर की नहीं बल्कि स्क्रीन-स्क्रीन की रोशनी बन चुकी है और पूरे भारत को एक डिजिटल सांस्कृतिक धारा में जोड़ रही है।

बन चुका है ऑल इंडिया फेस्टिवल

आज दीपावली भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे जा चुकी है। जहां पहले लोग कहते थे कि हर राज्य अपने-अपने तरीके से दीपावली मनाता है, वहीं अब देखा जा रहा है कि यह संपूर्ण भारत का एक साझी रंगत वाला त्योहार बन चुका है। मॉल्स, कालोनियां, ऑफिसेस, हाउसिंग सोसायटी आदि सब जगह दीपावली के अखिल भारतीय सेलिब्रेशन के दर्शन होते हैं। आज दिवाली भाषा, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय उत्सव बन चुकी है, जो सभी भारतीयों को एक साझा पहचान देती है।

विदेशों में भी जगमगाती दीपावली

आज दुनिया में ब्रांड इंडिया की चमक का एक हिस्सा जगमग दीपावली भी है। भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में देखें तो दीपावली उसकी सिग्नेचर इमोशन बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई और सिंगापुर में इंडियन दिवाली नाइट आयोजित होती हैं। बुर्ज खलीफा पर भारतीय दिवाली की लाइट शो अब हर साल की परंपरा है। व्हाइट हाउस में, ब्रिटिश पार्लियामेंट और कनाडा में, लेचिसलेचर और दीपावली के दीये जलाना अब ग्लोबल सॉफ्टपावर का प्रतीक है। जरा गौर कीजिए इन आयोजनों के केंद्र में सिर्फ धार्मिकता नहीं होती बल्कि भारतीय आधुनिकता, बहुलता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं। यह वही आत्मविश्वास है, जो बताता है कि भारत अपनी परंपरा को 21वीं सदी के फ्रेम में फिट करने में सक्षम है।

आधुनिकता-आर्थिक संपन्नता का प्रतीक

देश के हर क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों की चरम स्थिति, छोटे दुकान से लेकर ई-कॉमर्स के दिग्गज तक दीपावली को अपनी ताकत से जोड़ते हैं। इस तरह यह एक फेस्टिवल टेक्नोलॉजीकरण भी है। डिजिटल पेमेंट, ई-गिफ्ट और सोशल मीडिया ने त्योहार को एक साझा राष्ट्रीय अनुभव बना दिया है। इसलिए दीपावली अब भारत का कल्चरल एक्सपोर्ट बन चुकी है, जो भारतीय प्रवासियों के माध्यम से विश्व स्तर पर मनायी जाती है। कुल मिलाकर दीपावली अब महज एक धार्मिक या सांस्कृतिक त्योहार भर नहीं बल्कि यह भारत की आर्थिक ताकत और आधुनिकता का सबसे सशक्त प्रतीक बन चुका है। *

देश का पावरफुल कल्चरल सुपर ब्रांड

आज के दौर में दीपावली आधुनिक भारत का सबसे पावरफुल सुपर ब्रांड बन चुकी है। हर सफल आधुनिक राष्ट्र के पास एक साझा भावनात्मक प्रतीक होता है। जैसे अमेरिका के पास थैंक्स गिविंग, चीन के पास स्प्रिंग फेस्टिवल, जापान के पास चेरी ब्लॉसम फेस्ट, उसी तरह भारत के पास दीपावली जैसा पर्व है। यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक आकांक्षाओं को भी बहुत करीब से व्यक्त करता है। दीपावली आज महज एक सालाना पर्व नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई, हमारी तकनीकी उन्नति की चमक, व्यापार की मजबूती, उसकी सक्रियता और सामाजिक एकता की प्रतीक भी बन चुकी है यानी, दिवाली अब केवल धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधि है, जो भारत को परंपरा से प्रगति तक जोड़ने वाला पुल बनाती है। दीपावली आज अखिल भारतीय आधुनिक संस्कृति की धुरी है। हर भारतीय समुदाय हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख अपने-अपने अर्थों में इसे अपनी विरासत का जीवंत हिस्सा मानते हैं।

एक समय तक दीपावली के मौके पर परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ खेल के तौर पर जुआ खेलने की परंपरा रही। लेकिन हाल के वर्षों में ऑनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग की लत ने बड़ा सामाजिक-आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। इस बारे में अवेयर रहने की जरूरत है।

भारी नुकसान दे सकती है ऑनलाइन गेमिंग की लत

{ अवेयरनेस }
एन.के. अरोड़ा

शगुन और परंपरा के नाम पर जिस तरह से हाल के सालों में लोगों द्वारा दीपावली के मौके पर ऑनलाइन जुए का ट्रेंड बढ़ा है, उसके कारण गैंबलिंग की लत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक चिंता का भी विषय है। परंपरा के नाम पर आजमाई जा रही इस खतरनाक आदत के कारण लोगों की जिंदगी ही आर्थिक संकट से घिर गई है।

परंपरा के नाम पर ऑनलाइन गेमिंग: यह मान्यता है कि दीपावली के अवसर पर जुआ खेलना शुभ होता है। इसलिए लोग परंपरा के नाम पर आमतौर पर दीपावली के मौके पर आपस में जुए की गतिविधियों पर हाथ आजमाते हैं। लेकिन कई बार इसके जरिए दीपावली जैसे रोशनी, मेलजोल और खुशियों के त्योहार को परेशानियों का सबब बना लेते हैं। नतीजतन रोशनी के इस त्योहार के ऐन मौके पर उनके घरों में परेशानियों का अंधेरा छा जाता है।

बुरा एडिक्शन है ऑनलाइन गेमिंग: दीपावली की रात ही नहीं ऑनलाइन गैंबलिंग ऐसा एडिक्शन बन गया है, जो सामान्य दिनों में भी लोगों की बर्बादी का कारण बन रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पुलिस भी इस बुराई पर चाहकर भी प्रभावी प्रतिबंध नहीं लगा पाती, क्योंकि यह सारी गतिविधि एक स्मार्टफोन की स्क्रीन या किसी डिजिटल एप्स तक सिमटकर रह गई है, जो एक क्लिक के साथ ही हमारी पकड़ से बहुत दूर जा चुकी होती है।

क्यों-कैसे फंस जाते हैं इस दुष्चक्र में: पहले जुआ खेलने के लिए ऐसी कोई खास सुरक्षित जगह ढूंढ़नी पड़ती थी, जहां तक पुलिस और समाज पर नैतिक दबाव बनाने वाले लोगों की पहुंच न हो या इन लोगों को यहां तक पहुंचने में मुश्किल हो। लेकिन आज की तारीख में ऑनलाइन गेमिंग या मोबाइल के स्क्रीन पर संपन्न होने वाला जुआ इतना आसान हो गया है कि हम जब चाहें और जहां से चाहें, इसे खेल सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों, अरबों के आर्थिक आधार वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इसके लिए हमें बोनस और विज्ञापन के जरिए ललचाती हैं। साथ ही लोगों को डिजिटल गतिविधियों के जरिए ललचाकर फंसाने वाली कंपनियां 'दिवाली ऑफर', 'लकी स्पिन', 'कैश बोनस', जैसी रसीली बातों से हमें फांसते हैं और देखते ही देखते हम इन पैसे चूसने वाली स्कीमों के चक्कर में फंस जाते हैं। बस एक जीत के जरिए जिंदगी को मालामाल करने की तमन्ना से हम अपने पास जो भी होता है, सब कुछ बड़ी आसानी से गंवा देते हैं और इस तरह धोखे-धोखे में लाखों, करोड़ों लोग ऑनलाइन गेमिंग में फैले गैंबलिंग के खेल से कंगाल हो जाते हैं।

गंवा देते हैं हजारों करोड़: हर साल लाखों लोगों की बर्बाद कहानियों के बावजूद, लोग इनसे सबक लेने की बजाय अगली बर्बाद कहानियों का हिस्सा बनने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पिछले पांच सालों से हर साल दीपावली के मौके पर अनुमानतः आम लोग 15 से 20 हजार करोड़ रुपए तक इस ऑनलाइन जुए में गंवा बैठते हैं, जो उनकी जिंदगीभर की गाढ़ी कमाई होती है। यही कारण है कि आजकल रोशनी के इस पर्व में हर साल लाखों लोगों की जिंदगी में हमेशा-हमेशा के लिए अंधकार भर जाता है।

कानूनी स्थिति: हालांकि पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 के तहत जुआ एक सार्वजनिक सामाजिक अपराध है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी हथेली में अटके मोबाइल की स्क्रीन पर धूम-धड़ाके से चलने वाली जुए की महफिलों पर कानून नहीं लागू होता था। हालांकि इस सबके बावजूद तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग के कई रूपों पर प्रतिबंध लगाया है, बावजूद इसके दिवाली की रात जुए के लिए बेकरार करोड़ों लोगों को यह आंशिक प्रतिबंध बर्बाद होने से नहीं बचा पाते। यही वजह है कि जोर-शोर से लाखों लोग ऑनलाइन गेमिंग पर हर तरह से प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं। लेकिन आजादी और लोकतंत्र के नाम पर उतने ही लोग इसे रेगुलेट करने की वकालत करते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोगों के ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बाद हो जाने के बावजूद इस पर प्रतिबंध नहीं लग रहा। हालांकि 1 अक्टूबर से देश भर में ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025 लागू हो गया है। इसमें रियल मनी गेमिंग संचालित करने वाली कुछ कंपनियों और एप्स पर बैन लगा दिया गया है। इसका प्रचार करने वालों पर भी कड़े दंड का प्रावधान है।

दूर रहने का लें संकल्प: दीपावली की रोशनी तभी हमारे लिए सार्थक होगी, जब वह हमारे परिवारजनों के चेहरों पर खुशियों का उजास फैलाए, न कि ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बादी का अंधेरा छाए। इसलिए इस साल ऑनलाइन गेमिंग से दूरी बनाने के लिए संकल्प लें। *

{ गजल }
अब्दुल कलाम

मन के फेर हैं बाबा

इधर देखो जिधर देखो मचा अंधेर है बाबा
सलामत दिन निकल जाए तो समझो खैर है बाबा

कोई सूरत तो फिर निकले कि सच का बोल-बाला हो
मगर निकले भी कैसे झूठ इतना दिलेर है बाबा

आग की जद में शहर जो आ गया तो फिर
बचेगा कुछ नहीं हिजरत में फिर क्यों देर है बाबा

मिटाने हम चले हैं देश की फिरका परस्ती को
जहां पर खून के रिश्तों में देखे बैर है बाबा

यहां सर पे कफन हमने ही बांधा वक्त जब आया
वो कहते हैं कि हम उनके लिए अब गैर हैं बाबा

फाइलों में दब के रह जाती है अब फरियाद भी
कोर्ट-कचहरी न्याय सब मन के फेर हैं बाबा

{ लघुकथाएं }

अनमोल लम्हे

रिटायरमेंट के बाद निर्माण नगर में ही रहना विनीत। सभी दोस्त साथ में मस्ती करेंगे।' शैलेंद्र ने विनीत से कहा, जब वह किसी काम से निर्माण नगर आया हुआ था।

'हां! देखता हूं।' विनीत ने कहा। पर मन ही मन वह सोच रहा था कि क्या है इस शहर में? दिल्ली में जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां कितना अच्छा पार्क है, जिम है, स्विमिंग पूल है। हर अवसर पर कुछ न कुछ बढ़िया कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अच्छा जीवन कटेगा वहां। यही सब सोचकर रिटायरमेंट के बाद विनीत निर्माण नगर के बजाय दिल्ली में ही बस गया। सुबह मॉर्निंग वॉक, फिर जिम और उसके बाद स्विमिंग। बीच-बीच में सोसायटी की मीटिंग और अकसर तरह-तरह के कार्यक्रमों में शामिल होना। विनीत का यही रूटीन हो गया था। वह सोचने लगा कि जीवन का पूरा मजा वह ले रहा है।

कुछ समय बाद उसे किसी काम से फिर निर्माण नगर जाने का मौका मिला। तब तक उसके अधिकांश दोस्त रिटायर हो चुके थे। उसने देखा कि सुबह-सुबह कई दोस्त मॉर्निंग वॉक पर इकट्ठे होते हैं। फिर शुरू होती हैं बचपन की बातें और हंसी-ठहाके। कोई अपने टीचर के नकल उतारने वाली हरकत के बारे में बताता तो कोई एक-दूसरे के साथ की जाने वाली शैतानियों के किस्से सुनाता। और भी कई तरह-तरह की बातें वे सब आपस में करते हैं। इसी तरह शाम को भी सारे दोस्त इकट्ठे हो जाते और फिर शुरू हो जाता ठहाकों का दौर। दिल खोल कर हंसते थे सभी दोस्त। ऐसा लगता मानो फिर से वे बचपन की मस्ती का आनंद लेने लगे हों।

अपने दोस्तों के मस्ती भरे अंदाज को देखकर विनीत सोचने लगा वैसे तो दिल्ली में जीवनशैली और सुख-सुविधाएं यहां से बेहतर हैं, पर बचपन के दोस्तों के साथ यह मौज-मस्ती वहां नहीं मिल पाती है। विनीत ने मन ही मन खुद से कहा, 'सच में ये आनंद भरे पल अनमोल हैं।' *

-विनय कुमार पाठक

फॉलोवर्स

आदित्य ने सुबह नींद से जगते ही अपना इंस्टा अकाउंट चेक किया। 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख हो गई है।' मोबाइल पर नोटिफिकेशन था। आदित्य जोश में आ गया। मुट्ठियां बंद कर हाथों को झटकते हुए कहा, 'यस!' वह काफी दिनों से अपने इंस्टा अकाउंट पर फॉलोवर्स की संख्या बढ़ाने की कोशिश में लगा हुआ था। आदित्य मुंबई में रहता है। उसका टू बीएचके फ्लैट है। कुछ वर्ष पहले उसके मम्मी-पापा की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी। वह उनकी अकेली संतान है। बस उसके दादाजी हैं, जो मुंबई से दूर एक गांव में रहते हैं। जब तक मम्मी -पापा रहे तब तक वह उनसे मिलने जाता था। उसके बाद वह कभी गांव नहीं गया। अभी वह अपना मोबाइल देख ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने एक बुजुर्ग आदमी थे।

'जी कहिए..।'

'तुम निशिकांत के पोते आदित्य हो?'

'जी, आप कौन?'

'मैं दयाल! निशिकांत ने मुझे भेजा है। उसकी तबीयत बहुत खराब है। शायद अब ज्यादा जीवित न रहे। मरने से पहले तुमको देखना चाहता है। मेरे साथ अभी गांव चलो।'

'अभी! एकदम से?'

'हां, नहीं तो शायद तुम अपने दादाजी को आखिरी बार भी ना देख सको।'

'देखिए, अभी मेरे पास बहुत सारे जरूरी काम पेंडिंग हैं। ऐसा करिए, आप जाकर उनसे कह दीजिएगा, मैं रविवार को आऊंगा। हां मेरा मोबाइल नंबर भी लेते जाइए। मुझे फोन पर दादाजी से बात करा दीजिएगा।'

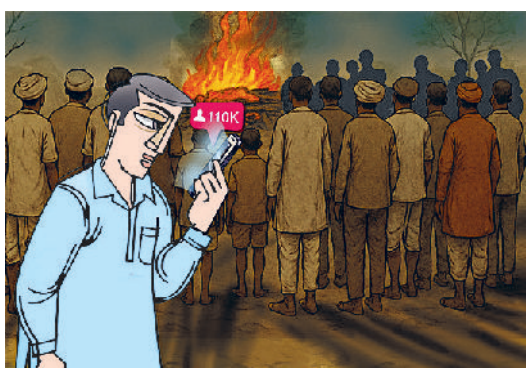

दयाल निराश होकर वापस लौट गए। आदित्य चंद मिनटों तक दादाजी के बारे में सोचता रहा। जैसे ही उसे फॉलोअर्स का ख्याल आया वह उन्हें भूल गया। उसके हाथ तेजी से मोबाइल पर चलने लगे। अगले दिन सुबह-सुबह उसके पास फोन आया, 'तुम्हारे दादाजी नहीं रहे।' दयाल की ही आवाज थी।

'ओह! मैं आता हूं।' आदित्य ने कहा। उसने फौरन अपने बैग में दो जोड़ी कपड़े लिए और गांव के लिए रवाना हो गया। करीब पांच-छह घंटे का रास्ता था। मगर जिस ट्रेन में वह बैठा था, वह जगह-जगह रुक रही थी। छह घंटों में वह आधे रास्ते भी न पहुंच सका। अगले स्टेशन पर पहुंचकर वह ट्रेन से उतर गया और गांव जाने वाली बस पकड़ ली। मगर दुर्भाग्य कि बीच में सड़क धंसने से बस आगे न जा सकी। गांव अब भी तीस किलोमीटर दूर था। वह बाइक सवारों से लिफ्ट लेता हुआ किसी तरह गांव पहुंचा। तब तक काफी देर हो चुकी थी। सूरज ढल चुका था। अंधेरा हो रहा था। हर ओर सूनापन फैल रहा था। दादाजी के घर के दरवाजे पर कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उसने उनसे दादाजी के बारे में पूछा।

'हमें लगा अब तुम नहीं आओगे। इसलिए गांव वाले उनको श्मशान घाट ले गए।' वह श्मशान घाट की ओर दौड़ा। उसके दादाजी का शव चार लोग अपने कंधे पर उठाए चले जा रहे थे। पीछे-पीछे ढेर सारे गांव वाले थे। वह वहीं ठिठक गया। उसे तो लगा था, उसके बिना दादाजी को भला कौन कंधा देगा। मगर यहां तो पूरा गांव है दादाजी के पीछे। गांव वालों ने चिता सजाई और दादाजी का शव अग्नि को समर्पित कर दिया। आदित्य भीड़ के पीछे ही ठिठका रहा, आगे नहीं आया। तभी उसके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आया 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख दस हजार हो गई है।' *

-सरस्वती रमेश

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

जिंदगी@मगनपुर इस्टेट

वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का तीसरा उपन्यास 'जिंदगी@मगनपुर इस्टेट' हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इस नॉस्टेल्जिक उपन्यास का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग शख्स विमान भौमिक है, जो मगनपुर इस्टेट में बिताए अपनी किशोरावस्था के दिनों को याद करता है। लेकिन उसमें कहीं भी भावुकता का अतिरेक या पुराने दिनों के प्रति मोह की सांद्रता नजर नहीं आती है। वो खिलंदड़े अंदाज में बीती हुई घटनाओं को याद करता है। पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक के बीच की पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास, उस दौर के मध्यवर्गीय परिवार के किशोरों की जीवनशैली, उनके सपने, उनकी बचकानी हरकतें और छोटी-छोटी खुशियों को भी बटोर लेने की उनकी ललक को बहुत रोचक तरीके से सामने लाता है। हालांकि इस उपन्यास का कथानक और उसमें उपस्थित सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन जो भी लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वो सहज ही इस उपन्यास के कथा-तंतुओं से वास्तविक छवि को बुन सकते हैं। लेखक के किस्सागोई के अंदाज में पाठक को बांधे रखने का जादुई सामर्थ्य है। *

पुस्तक: जिंदगी@मगनपुर इस्टेट (उपन्यास)
लेखक: गोविंद उपाध्याय, **मूल्य:** 299 रुपए,
प्रकाशक: सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली

अमेजिंग स्पॉट्स / रजनी अरोड़ा

इन दिनों फेस्टिवल सीजन चल रहा है। आपके घर के आस-पास और बड़ी मार्केट्स में खूब रौनक और भीड़-भाड़ दिख रही होगी। बाजार ऐसा स्थान होता है, जहां से हम सभी अपनी जरूरत का हर सामान खरीद सकते हैं। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी बाजार हैं, जो अपनी खूबसूरती, भव्यता, अद्भुत सामानों की बिक्री और अनोखेपन के कारण बहुत मशहूर हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे बाजारों और उनकी विशेषताओं पर एक नजर।

ये हैं दुनिया के कुछ अनोखे-प्रसिद्ध बाजार

डम्नोएन सडुआक फ्लोटिंग मार्केट

यह अनोखा बाजार थाईलैंड में बैंकॉक से लगभग 100 किमी. दक्षिण-पश्चिम में राजबुरी इलाके में लगता है। डम्नोएन मार्केट थाईलैंड के सबसे मशहूर और बड़े तैरते हुए बाजारों में से एक है। इस

बाजार का निर्माण 19वीं सदी के अंत में तत्कालीन राजा रामचतुर्थ के आदेश पर हुआ था। जिसका उद्देश्य माइकलोंग और थाची नामक नदियों को आपस में जोड़ना और उनके माध्यम से व्यापार को सुगम बनाना था। आज यह बाजार सदियों पुरानी थाई परंपरा को दर्शाता है। यहां महिला विक्रेता ज्यादा हैं, जो पारंपरिक कपड़े पहनकर लकड़ी की छोटी नावों पर सामान बेचती हैं। इनमें फल, सब्जियां, ताजा पका हुआ स्ट्रीट फूड, स्थानीय उत्पादों के साथ-साथ हस्तशिल्प का सामान होता है। यह बाजार सुबह सात से नौ बजे तक सबसे अधिक व्यस्त रहता है। इच्छुक खरीदार ही नहीं, इस अनोखी फ्लोटिंग मार्केट में घूमने और इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक भी नाव से आते हैं।

ईमा कीथेल मार्केट

यह अनोखा बाजार भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की राजधानी इंफाल में लगता है। यह बाजार लगभग 500 वर्ष पुराना है और एशिया के सबसे बड़े बाजारों में गिना जाता है। ईमा केथेल बाजार की नींव 16वीं शताब्दी में लल्लुप काबा के विरोधस्वरूप हुई मानी जाती है। उस समय पुरुषों को जबरन बंधुवा मजदूर बनाने और दूरदराज के क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजने की प्रथा थी। जिसके चलते महिलाओं को घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। उन्हें खेती, विभिन्न खाद्य पदार्थ, घरेलू सामान, परंपरागत सिलाई-बुनाई, हस्तकला निर्मित वस्तुओं का निर्माण,

मछली पकड़ने जैसे कार्य करके अपने उत्पाद बेचने पड़े। तभी यह बाजार अस्तित्व में आया।

आज ईमा कीथेल मार्केट दुनिया में एकमात्र ऐसा बाजार है, जो पूरी तरह से महिला विक्रेताओं तकरीबन (6000) द्वारा संचालित किया जाता है। ईमा कीथेल नाम का मणिपुरी भाषा में अर्थ मां का बाजार है, जिसमें प्रायः सभी दुकानदारों को ईमा या मां कह कर संबोधित किया जाता है। यह मुख्यतया तीन खंडों में बंटा हुआ है। जहां घरेलू सामान, फल-सब्जियां, मसाले, विभिन्न प्रकार के जलीय जीव, मणिपुरी पारंपरिक वस्त्र और बुनाई के उत्पाद मिलते हैं। यह केवल एक व्यापारिक केंद्र नहीं, बल्कि मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, गौरव और सामाजिक-आर्थिक महत्व का एक जीवंत प्रतीक है।

मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट

थाईलैंड के सामुन सोंग खराम प्रांत में लगने वाली मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट को स्थानीय भाषा में तलात रोखूप या फोल्डिंग अंब्रेला मार्केट भी कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे अनूठे और रिस्की बाजारों में से एक है। यह बाजार अपनी बिक्री वाले सामान के लिए नहीं, बल्कि एक्टिव रेलवे ट्रैक के किनारे बने होने और भारी आवाजाही के कारण मशहूर है। यानी, बाजार के दुकानदार ही नहीं, खरीदार भी रेलवे ट्रैक पर सामान खरीदते-बेचते हैं। यहां ताजे फल, सब्जियां, समुद्री भोजन और अन्य घरेलू सामान मिलता है। इस बाजार का सबसे बड़ा आकर्षण और अनोखापन है ट्रेन का बाजार के बीचों-बीच दिन में आठ बार गुजरना। जैसे ही ट्रेन के आने का हॉर्न बजता है, सभी दुकानदार रेलवे ट्रैक तक पहुंचने वाले अपनी-अपनी दुकान के तिरपाल, छतरियां और सामान तुरंत हटा लेते हैं। रेलवे ट्रैक पर बेखौफ चलने वाले खरीदार भी रास्ता देकर ट्रेन के गुजरने का इंतजार करते हैं। ट्रेन के चले जाने पर बिना देर किए दुकानें फिर सजा लेते हैं और कुछ पलों के लिए थमे बाजार की रौनक दुबारा शुरू हो जाती है। यह अनूठी दिनचर्या जहां स्थानीय वाणिज्य और रेल परिवहन के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण है, वहीं यहां आने वाले पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

ग्रैंड बाजार

तुर्की देश के इस्तांबुल शहर में स्थित ग्रैंड बाजार को तुर्की भाषा में कापाली चार्शी कहा जाता है। इसका निर्माण 1455 में ऑटोमन साम्राज्य के सुल्तान मेहमेद द्वितीय के आदेश पर शुरू हुआ था। अपनी जटिल वास्तुकला, गुंबददार छत और ऐतिहासिक भव्यता के कारण यह बाजार सिर्फ

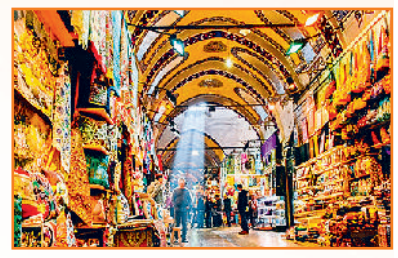

एक शॉपिंग डेस्टिनेशन नहीं है। बल्कि तुर्की की संस्कृति, इतिहास और एशिया-यूरोप के मध्य में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में इस्तांबुल की भूमिका को दर्शाता, जीता-जागता संग्रहालय भी कहा जा सकता है। आज ग्रैंड बाजार दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत बाजारों में से एक है। इसमें 61 से अधिक कवर किए गलियारे और 4000 से अधिक दुकानें हैं। सदियों से व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे ग्रैंड बाजार में लाखों पर्यटक और खरीदार रोजाना पहुंचते हैं। हस्तनिर्मित टर्किश कालीन, रंगीन सेरेमिक की वस्तुएं, सोने-चांदी के आभूषण, चमड़े के सामान के साथ विभिन्न प्रकार के मसाले, आकर्षण का केंद्र हैं। खरीदारी के लिए मोल-भाव करने का प्रचलन भी यहां है, जो आगुंतकों के खरीदारी के अनुभव को अधिक रोमांचक बना देता है। *

डल झील बाजार

भारत के केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर की डल झील पर लगता है यह तैरता हुआ डल झील सब्जी बाजार। डल झील के बीच पानी में थोड़े समय के लिए लगने वाला बाजार कश्मीर घाटी की संस्कृति और सुंदरता का अद्भुत प्रतीक माना जाता है। यह भारत का इकलौता और दुनिया के चुनिंदा अनोखे बाजारों में एक है, जो पानी के ऊपर लगते हैं। इस बाजार का नजारा डल झील की शांत नीली पृष्ठभूमि और पहाड़ों की छाया के बीच कश्मीरी जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के साथ निवासियों के गहरे जुड़ाव को भी दर्शाता है। डल झील बाजार में रोजाना सुबह पांच से सात बजे तक चहल-पहल बनी रहती है। यानी इस बाजार से यदि किसी को सब्जियां खरीदनी हैं, तो उसे सुबह जल्द ही आना पड़ेगा। स्थानीय विक्रेता लोग शिकारा नाव पर सवार होकर इस बाजार में खुद उगाई सब्जियां लेकर बिक्री के लिए आते हैं। वहीं खरीदार भी अपने शिकारा पर सवार होकर आते हैं और चलते हुए एक नाव से दूसरी नाव पर खरीद-फरोख्त करते हैं।

यूनीक पेंटिंग / मनीष कुमार चौधरी

सदियों पहले इटेलियन पेंटर लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाई गई अद्वितीय पेंटिंग मोनालिसा का आकर्षण अब भी बरकरार है। इस यूनीक पेंटिंग से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर एक नजर।

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग मोनालिसा ने कल्पना को जितना मोहित किया है, उतना शायद ही किसी कलाकृति ने किया हो। उनके इस चित्र का रहस्य और आकर्षण 30 इंच X 20 इंच के साधारण फ्रेम से कहीं आगे तक फैला हुआ है। वह किताबों, फिल्मों, गीतों और यहां तक कि एक कला चोरी का विषय भी है। समय के साथ पेंटिंग का वार्निश भले ही धुंधला और पीला पड़ गया हो, लेकिन उनकी भावपूर्ण मुस्कान और रहस्यमयी निगाहें अभी भी चमकती हैं।

कौन थी असली मोनालिसाः हालांकि मोनालिसा की पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं। लेकिन ज्यादातर विद्वानों और कला इतिहासकारों का मानना है कि यह चित्र फ्रांसीसी संभ्रांत महिला लिसा डेल जियोकोंडो का है, जो एक धनी रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी थी। लिसा का जन्म 1479 में हुआ था और उन्होंने 15 साल की उम्र में फ्रांसेस्को से शादी की थी। वह बहुत सुंदर और आकर्षक थीं। लियोनार्डो ने 1503 में मोनालिसा को चित्रित करना शुरू किया और 1517 तक इस पर काम किया। हालांकि यह पेंटिंग डेल जियोकोंडो के घर में कभी नहीं सजी। लेकिन दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हुई।

स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमालः इस चित्र को बनाने में लियोनार्डो ने अपनी विशिष्ट स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें किसी व्यक्ति के फेस पेंटिंग में होंठों और आंखों के किनारों को सूक्ष्म रूप से धुंधला करके धुएं जैसा रहस्यमयी प्रभाव पैदा किया जाता है। इस प्रभाव से चित्र की आंखें विभिन्न भागों पर घूमती दिखती हैं, मुस्कुराहट बदलती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में ऐसे भाव प्रकट होते हैं, जिसको देखकर यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह खुश है या उदास। वह मुस्कुरा रही है या नहीं। रहस्य का यही स्पर्श पेंटिंग के आकर्षण में इजाफा करता है और दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

रहस्यात्मक मुस्कानः मोनालिसा की मुस्कान एक सीधी-सादी, हर्षित मुस्कान नहीं है। इसे अकसर उदासी, गंभीरता या किसी रहस्य का संकेत देने वाली मुस्कान

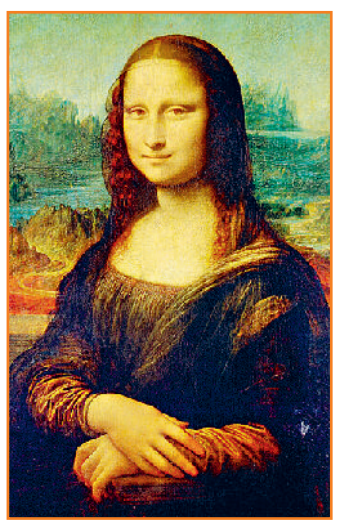

के रूप में वर्णित किया जाता है। यह मुस्कान लियोनार्डो की मानवीय अभिव्यक्ति और भावनाओं की बारीकियों को पकड़ने की असाधारण क्षमता को भी दर्शाती है। इस मुस्कान का पेंटिंग आर्ट पर अमिट प्रभाव रहा है, जिसने अनगिनत कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को इसकी गहराई का पता लगाने और अपनी व्याख्याएं रचने के लिए प्रेरित किया है। इस पेंटिंग को अब तक की सबसे महान भावनात्मक पेंटिंग तक बताया गया है। कुछ इसे परंपरा से परे, परिभाषा से परे, छवि से परे सत्य की तलाश करते हुए पाते हैं। 'तुम्हारी मुस्कान मोनालिसा जैसी है।' यह कहने का मतलब है-रहस्य। यानी कोई मुस्कान रहस्य और जिज्ञासा से कैसे जुड़ जाती है, मोनालिसा की मुस्कान इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसा माना जाता है कि मोनालिसा द्वारा अपनी मुस्कान में अपनी खुशी को पूरी तरह से व्यक्त न करने का कारण उनके पिछले नुकसान का दर्द था। यह सिद्धांत कई शोक संतप्त महिलाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है।

लियोनार्डो की कलात्मकता का कमालः लियोनार्डो ने चीजों को गहराई से देखने की अपनी क्षमता और अध्ययनों को अपनी कला में भी शामिल किया। मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में लियोनार्डो की अंतर्दृष्टि और गहरी समझ, उनकी उत्कृष्ट कृतियों को अमूल्य बनाती है। एक अध्ययन के अनुसार, मोनालिसा के मुंह की मूल तस्वीर 97 प्रतिशत बार 'खुशी' के रूप में देखी गई। यह शोध इस बात के पुख्ता सबूत देता है कि मुस्कान वास्तव में खुशी का चित्रण है। मुस्कान के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और पुनर्निर्माण करके वैज्ञानिकों को इस बात की गहरी समझ मिली कि लियोनार्डो दा विंची अपनी कलात्मकता के माध्यम से दर्शकों की भावनाओं को कैसे प्रभावित करते थे।

चोरी भी हो चुकी पेंटिंगः लियोनार्डो अपनी इस पेंटिंग को 14 साल तक अपने साथ रखे रहे। उनके प्रशंसक कलाकारों और छात्रों ने उनके जीवनकाल में ही इस कलाकृति की प्रतियां बनाना शुरू कर दिया था। यह चित्र अंततः लियोनार्डो के अंतिम संरक्षक फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम के संग्रह में शामिल हो गया। लेकिन 21 अगस्त 1911 को यह पेंटिंग चोरी हो गई। अगले दो सालों तक उसकी चोरी की कहानी एक सांस्कृतिक सनसनी बनी रही। वर्ष 1913 में विंसेंजो पेरुगिया नामक व्यक्ति पकड़ा गया, जिसने इसे चुराया था। इस तरह मोनालिसा वापस अपने फ्रेम में पहुंच गई। *

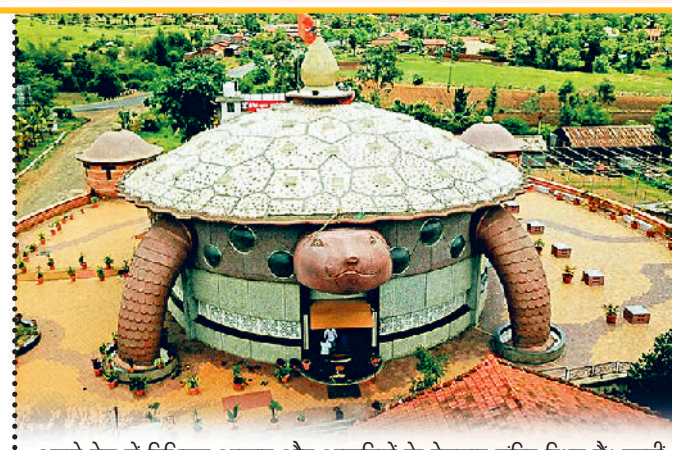

अपने देश में विभिन्न आकार और आकृतियों के बेशुमार मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक कछुए की आकृति वाला अनूठा मंदिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है। इस मंदिर की विशेषताओं और इससे जुड़ी निर्माण कथा के बारे में जानिए।

कछुए की आकृति वाला अजब-अनूठा मंदिर

रोचक / अशोक वाधवाणी

अपने भारत देश में बहुत सारे ऐसे अद्भुत, अनूठे मंदिर हैं, जिन्हें देखने वाला मंत्रमुग्ध होकर निहारता रह जाता है। इनकी स्थापत्य कला का नायाब नमूना हर किसी को अचरज से भर देता है। कुछ की संरचना इतनी भव्य और अनूठी है कि उसे देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। कुछेक मंदिर तो ऐसे हैं, जो आकार में छोटे हैं, लेकिन उनमें लोगों को आकर्षित करने की भरपूर क्षमता है। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर पश्चिम

अपने अनोखे स्ट्रक्चर के कारण प्रसिद्ध है यह मंदिर

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के पैजार वाडी नामक छोटे से स्थान में स्थित है, जो कि पन्हाला हिल स्टेशन के निकट है। कोल्हापुर-रत्नागिरी रोड पर, कोल्हापुर से महज 25 किमी. की दूरी पर बने इस मंदिर की विशेषता है, इसका कछुए की अनोखी आकृति का होना। कछुआ आकृति वाला दूसरा कोई मंदिर पूरे महाराष्ट्र में और कहीं नहीं है।

निर्माण से जुड़ी मान्यताः इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यता के अनुसार एक समय में यहां पर श्रीदत्त चिले महाराज के नाम से एक प्रसिद्ध संत हुआ करते थे। वे अपने अनुयायियों के साथ अलग-अलग जगहों का भ्रमण किया करते थे। कोल्हापुर शहर के आस-पास की जगहों जैसे- टेंबलाई, नृहिंहवाड़ी, कोकण क्षेत्र में जोंध मारुति आदि के अलावा पंढ़रपुर जैसी धार्मिक जगहों पर वे अकसर जाते रहते थे। वे जहां भी जाते थे, उस इलाके में रहने वाले कछुओं को अवश्य याद करते थे। किसी स्थान पर पहुंचकर वे जब अपने अनुयायियों से कहते कि कछुआ यहीं-कहीं होना चाहिए, तो उनके शिष्यों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती। उन शिष्यों के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, जब गुरुदेव के कहे स्थान पर कछुए का दर्शन हो जाता था। श्रीदत्त महाराज का कछुए के प्रति इतना लगाव-जुड़ाव क्यों था? इसकी सही-सही जानकारी नहीं मिली। लेकिन उनके अनुयायी और शिष्य मानते थे कि महाराज जहां कह देंगे, वहां कछुआ जरूर दिख जाता था। वर्ष 1986 में उनके देह त्यागने के बाद उनकी समाधि बनाई गई। मंदिर ट्रस्ट के सारे सदस्यों ने योजना बनाई कि चिले महाराज का कछुए के प्रति आकर्षण को ध्यान में रखकर कछुए की आकृति वाला मंदिर बनवाया जाएगा।

मंदिर की संरचना-विशेषताः कुल 5000 स्क्वायर फीट एरिया में बने इस मंदिर की ऊंचाई 51 फुट, लंबाई 60 फुट और चौड़ाई 80 फुट है। इसकी विशेषता यह है कि मंदिर के निर्माण में किसी भी खंबे का सहारा नहीं लिया गया है। इसकी खूबियों, खासियतों को ध्यान में रखकर ही एक अमेरिकन संस्था ने इसे वर्ष 2005 'आउटस्टैंडिंग स्ट्रक्चर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

ऐसे किया गया निर्माणः इस मंदिर की योजना को मूर्त रूप देने के लिए पुंडलिक राव इंगले ने विशेष प्रयास किए थे। इसे बनाने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आर्किटेक्ट्स द्वारा डिजाइनें मंगाई गईं। आखिरकार 15 में से एक आर्किटेक्ट प्रमोद बेरी की डिजाइन का चयन किया गया। इस तरह मंदिर का निर्माण पूरा किया गया। इस मंदिर के अंदर ही चिले महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो श्रद्धालुगणों की आस्था का केंद्र है।

लगता है श्रद्धालुओं का जमघटः ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष बाबा साहब चव्हाण के अनुसार देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का तांता, दर्शन करने के लिए इस मंदिर में लगा रहता है। कई विशेष धार्मिक अवसरों जैसे- श्रीदत्त जयंती, चिले महाराज जी की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, हर माह की अमावस्या, गुरु पूर्णिमा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक अवसरों पर कई कार्यक्रमों का यहां आयोजन किया जाता है। *

जो फिल्में कॉमर्शियली सक्सेसफुल हैं, जरूरी नहीं कि वे कालजयी फिल्में भी हों। ऐसे ही यह भी जरूरी नहीं कि सदाबहार कालजयी फिल्मों का बॉक्स-ऑफिस रिकॉर्ड भी अच्छा रहा हो। बॉलीवुड की कुछ क्लासिक और कॉमर्शियली सक्सेसफुल फिल्मों के फंडे पर एक नजर।

बॉलीवुड की क्लासिक फिल्में वर्सेस कॉमर्शियली हिट फिल्में

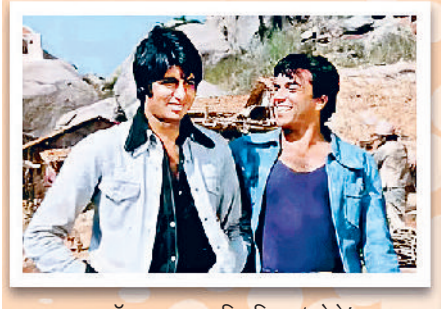

ब्लॉकबस्टर सुपरहिट फिल्म 'शोले'

कल्ट क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम'

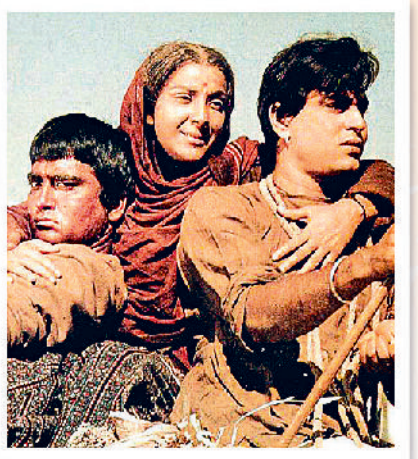

कालजयी फिल्मों में शामिल है 'मदर इंडिया'

सिल्वर स्क्रीन / हेमंत पाल

कालजयी फिल्में वे होती हैं, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय जीवन और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये फिल्में दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। हालांकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कारोबारी सफलता भी बहुत मायने रखती है, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना।

कॉस्टिंग-इनकम-सक्सेस का फंडाः यह बात सच है कि किसी भी फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन या फिल्म से इनकम के आधार पर उसे हिट या फ्लॉप का तमगा दे दिया जाता है। फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना अधिक बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी सफलता का आकलन किया जाता है।

बॉक्स ऑफिस पर सक्सेस फैक्टर्सः बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की सक्सेस के अनेक फैक्टर्स होते हैं। आज के दौर में फिल्में अकसर जबर्दस्त एडवर्टाइजमेंट के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी मैजिकल अट्रैक्शन पैदा किया जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह फंडा हर फिल्म के लिए सफल नहीं होता, इसलिए क्योंकि ये इफेक्ट टेंपरेरी हो सकते हैं, जो ऑडियंस को एक बार थिएटर तक खींच सकते हैं, लेकिन अगर फिल्म कंटेंट में दम नहीं है तो कुछ ही समय में सारा प्रचार का जादू फेल भी हो जाता है।

क्लासिक फिल्मों की खासियतः सवाल यह भी है कि अधिक निर्माण लागत और अच्छी-खासी कमाई वाली सभी फिल्में क्या लंबे समय तक दर्शकों को याद रह पाती हैं? इसका जवाब है, शायद नहीं, क्योंकि फिल्में महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि अपने कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में भी आईं, जिसने व्यावसायिक रूप से बड़ी सफलता पाई, लेकिन उन फिल्मों की कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं कुछ फिल्में कम बजट में बनीं, कम चलीं, लेकिन कालजयी हुईं। करोड़ों का कारोबार करने वाली सभी सुपरहिट फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पातीं क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थाई सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर किसी फिल्म का हिट होना, अकसर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन कालजयी फिल्में मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं।

बहुत कम बनती हैं कालजयी फिल्मेंः सौ सालों से ज्यादा लंबे भारतीय फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फिल्में अंगुली पर गिनी जा सकती हैं, जो हर दौर में पसंद की जाती रही हैं। 'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीकी नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं।

कालजयी फिल्मों के जरूरी तत्वः अगर फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरूरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

कॉमर्शियली फ्लॉप पर क्लासिक 'मेरा नाम जोकर'

कुछ कालजयी हिंदी फिल्मेंः बॉलीवुड की कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अपने रिलीज के दशकों बाद भी अपना एक अलग मुकाम रखती हैं। इन फिल्मों को हर दौर में हर पीढ़ी के दर्शकों का प्यार मिला। 'कागज के फूल', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'बॉबी', 'शोले', 'दीवार', 'उमराव जान' जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। इन फिल्मों की गिनती बॉलीवुड के क्लासिक कल्ट के रूप में होती है। खास बात यह है कि इन फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से भी सफलता के झंडे गाड़े थे।

कई फिल्में अपने समय में व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं, लेकिन बाद में उन्हीं फिल्मों को बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक का दर्जा मिला। उदाहरण के तौर पे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला' जैसी फिल्मों को देखा जा सकता है।

ये वे फिल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं। *